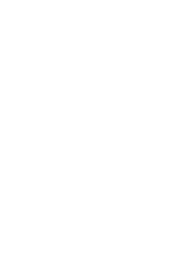


सन्दर्भ-सूची

विपय			पृष्ठ
भूमिका	•••		1-11
फा व्य	••	•••	१
काव्य-भेद	•••	•••	8
पद्य-काव्य	•••	•••	२
पिङ्गुल-गास्त्र	•••	•••	રૂ
इन्द (वृत्ति)			8
लघु-गुरु (हस्य-दीर्घ) ।	विचार	•••	ξ
ध्रावश्यक-नेाट	•••		१०
चिन्ह थ्रीर गणना		•••	શ્ર
गण	•••		१३
गण तथा देवता थीर उन	का फल	•••	ર્દ્ર
गणात्तर-देाय-परिहार	•••		38
तुक		•••	ર્શ
सङ्गीतात्मक-छन्दें		•••	રક
हुन्द गत मुख्य दीप		•••	٠,5 ٦,5
इन्द या वृत्ति (परिभाप	n-maran \	•••	7.9 ? E
मात्रिक-सम-द्वन्द-प्रकरर		•••	
(१) चै।पाई	i	•••	<i>3</i> 8
(१) चारार (२) राला	***	•••	<i>3</i> 8
(२) राखा (३) दृरिगीतिका	***	•••	34
	***	•••	3,4
(४) ते।मर (५)	***	•••	3,6
(४) सार	***	2	3.5



()		
विषय		
(२५) शाईलविकीडित		र्घ
(२६) मचगदन	•••	શ્ક
(30) टॉलिंड	•••	8=
यस्कि समान्तर्गत दगरक	•••	방=
1757 44424	٠.,	H£
दल शास्त्र में गतित क्रिक	•••	žo.
परिभाषार्ये	•••	to
शस्तार	•••	५२
मात्रिक-प्रस्तार	***	k3
मात्रा-प्रस्तार में सप की न्य	•••	k f
वर्ध-प्रस्तार-मध	***	15
उद्दिष्ट '''	•••	ŧ,
मात्रा-उद्दिष्ट	***	₹₹
मेर	•••	έą
पकावली-मेर	***	ĘŖ
खरड-मेर	•••	ές
मात्रा-मेरः	***	έŧ
पशावजी-माघा-मेर	•••	Vo.
खरड-मात्रा-मेर	•••	७१
पताका	***	υ ξ
मात्रा-पताका	•••	<u>.</u> 3
मर्कद्रों	•••	ડ ર
षर्च-मर्कटी	•••	52
मात्रा-मर्केटी	***	vŧ -
परिक्रिप्ट	***	32
***	***	=3
		-



दो शब्द

कवि होने झीर काव्य करने के लिए सब से झावश्यक बात काव्यशास्त्र का छान प्राप्त करना है । साहित्य सेवियों एवं साहित्य जिल्लासुओं के लिए भी काव्यशास्त्र का छान प्राप्त करना न केवल झावश्यक ही है बरन् झनिवार्य भी है, क्योंकि उसके विना साहित्यावजोकन से उन्हें झानन्द प्राप्त होना ती हुर रहा, कतिपय कठिनारों का सामना भी करना पड़ेगा और साहित्य से पूर्ण-परिचय भी न प्राप्त हो सकेगा।

काव्य-शास्त्र के दें। मुख्य विभाग हैं:— १. सलङ्कार-शास्त्र तिसमें काव्यानवर्गत गुल, देगि शब्द-शक्ति (लत्तवा, व्यञ्जना, ध्वित भादि) अलङ्कार पर्व रस आदि का तो काव्य के मुख्य तत्व हैं वर्जून होता है। २:— इन्द-शास्त्र या पिङ्गुज तिसमें कविता के कलेवर को रचना करने वाले वर्षों की मुख्यवस्थित नीतियों पर्व रोतियों और उनसे उत्पन्न होने वाली इन्दों के नियमों का निक्षण किया जाता है।

धनेक घन्यवाद हैं उन भावायों का जिल्होंने अन्द्र कहा की उपासना कर अहति के मन्द्रलातिमन्द्रल ममें के संनि-रोत्तर के द्वारा सङ्गीत पर्व कियता की जन्म दिया है। घन्य हैं महार्थ दिड्गल जिल्होंने दोनों के सुन्दर सामन्त्रस्य के लिए उन्हों का ध्वाविकार करके जन्द आख की रचना की है। साय ही धन्यवाद के पात्र हैं वे भावार्य पर्व लेखक भी जिल्होंने इस आख के सिद्धानों पर सुद्धम दृष्टिगत करते हुए इसका विकास

पर्व प्रकाश किया है।



सरस-पिङ्गल

पें नी काट्य की कई परिमाणाई निज्ञ मिन्न धावाट्यी के द्वारा पा ता काट्य का कह परिमाणयं मित्र मित्र धानाच्ये के हारा हो गई है किन्तु सब माधारत पर्व सर्वमान्य परिमाण परी है कि-

"दुन्तर मरम एस्ट्रारी, मली माधुरी रम्य। स्वामाविक भाषा हटा, भार भावनाविनास्य ॥

कार कहत है तादि हुए. ('क्षीरसाल'हत / 'नाटर-निवद से ' करांत् स्वामाविक मापा को वह महभ्यस्त्वत एहावली एवं

षास्यावली जिलमें मनाराज्यक, माधुरमधी सरसता तथा जिल्हत सुत्रपष्ट्र पर वित्यास को सेवकता होता है 'कास'

काव्य-भेड

बाबारों ने कार के निम्न निम्न सिद्धानों के बहुतार निम्न िमूर्ति कौर हरद (नाटक कारि)

्नाय कार, रय काख, बार बन्हें (निवित्त)।

- देश्य कास्य परं गुटक कार्य



सरम-पिहल

पिङ्गल-शास्त्र षात्य में सहीत की सहस्य है। वास में सहस्य की ताने हैं। जिस जिस पिलिए सीनिए नीतियां एवं मितियां की विवयना की जानी है तथा नियमां है काधार पर कविता चलार जाती है क्या कविया के हास उसे प्रजाता काहिन उनका दिवंचना जिल्लामार में होता है. उसे क्तिक साम्य करते हैं। कहिता सम्माधी इन नियमी की एक राज्यात (देवानिका) स्वयस्था-विधान में स्थान कार्या कार्या माम भावार प्रत्यह था। पिहल में हुए थे। हमोरिन सह गास्व (कर शास) हती में मान के ही किएकार हैका (हनके ट्यान करिएक कार प्राथानी में इस मान्य का विकास यह इसका सुद्धि की मार मार तक दिहान कवि का होत्र की विस्तृत हो करते. बाह कार है जीए सम्मक्त स्तरत दिकार करते हैं सन्ते अपने हैं। क्टा पर हम रिक्टून काल का संस्कृत में हेंबर केंग्रन काला ही क्या हैना कार्टन है कि क्यांचि हैने हैं समाव में भी सम्बद्धा वित्तरकारक सम्बद्ध क्या होता, क्यांचेत केवी हैं। भी नित्र नित्र सक्त क्षा कर्द बढ़ मेरानी त्यां कार्य हैं यह क्यांत्र कार्या स्टेस्टर होता कर्द बढ़ मेरानी त्यां कार्य हैं यह क्यांत्र कार्या कार्या ماده المراجعة ال terre il morte estation di real pri con prime service di दसमें हुएक कार्य करीन साम का का का विकास किया था। ति यह रिक्ट करिए सेन्द्र रास्त्रात है सके कर्त करेराता है सामक देव पक्ष प्रमुक्त हैं। कार्या स्थान के स्वापन स्थान के स्वापन स्थान के स्वापन स्थान के स्वापन स्थान स्थान The state of the s The Richard Louis Co with the English and the Control of the Mary and the second state of the second state

वर्णी आदि को गणना, व्यवस्था तथा उनका पक विशेष में स्थान तथा विचान के साथ मंद्रास्त्रत करने की दीनियाँ कि को गई हैं। दूसरा कारण विद्युलनाक के जम्म का कहायिन्। भी हो सकता है कि करियों के लिये परा-कारण के रचतार्य पे मार्ग निविधन हो जार्य जिनके द्वारा कान्य, करिता के क्या में होए खरने क्रारीए के। सरलता पर सुन्त के मारा पहुँच मके।

नय का अपना पय में कुछ पेसे विशेष गुण हैं जिनसे आर् होकर कारय में सङ्गीतासक पय पत्ता लाने की आपश्यक अनिवास्य हुई और विञ्चल लास्त्र का जन्म हुआ।

कहता न शंगा कि यद अपने विशेष गुणे के ही कारण इन प्रपानता रेपकता खोर व्यापकता की पहुँच गया कि प्रपेक विष में इसका समायेश पूर्ण कर में हो गया, और प्रायः सभी विष प्रपानक हो गये। यह बात विशेषनया संस्ट्रन में हैं।

सङ्गीत और काव्य के मन्मिया का पक्रमात्र फल पिट्टर जान्त्र है, यहां कविता की गय काव्य में प्रथक करता है।

ध्यात राजन चाहिए कि यदापि महीन का सम्यन्त्र कार से हैं और कारा का भी सम्यन्त्र मंगीन से है—होनी में धन्योच्य ध्य सहत्त्र है—हिर सी दोनी यक नहीं, बदन पुधकू पूध है—होनी की रीजियां तथा सीनियां जिल ही निज्ञ हैं।

द्यन्द (धृति)

सद्गीत में सम्याच राजने थाले वहीं और प्रात्राधों की पर वितार प्रथमनात्मक गय की वह गति हैं जा परावसा राजने हैं धार गाँ जा मकती हैं। त्रिवार में राजने की बात यह है कि हुने वर्षों (इस्त, हींनीहें) की विशिष्ट स्टानमा पूर्व ग्रावान के स्नाधा यर नवा सहीत. तय. ताल पर्व चग-रागिनी धारि केंद्र उत्कर्ण हेने बाली स्वरों की विशेष स्वयस्था के भाषार पर समाघारित होता है, यही होनी में मुख्य धन्तर है ।

निष्कर्ष रूप में ये क्हना चाहिए कि दुन्द में सामाजी झीर बर्गी की विरोप स्पष्टरा एवं गएना टीनी है, नया सङ्गीतसम्बन्धी क्वय कीर गति बाली पाराचाहिकता होती है।

बार दा प्रकार के होते हैं:--हम्य द्वीर दीवं, प्रथ्या लघु मार गुरु।

नेतः—तत्रो में पुत पर्टी का विवार ईसा व्याकरण में किया गया है नहीं क्या आता. और उनमें प्युत का नहीं रस्ते आते । विह्यातन्त्रों में यह पात नहीं, यहां प्युत का औ स्वतं-

वता से बाते हैं। दिन्दी भाग की सर्दें में बादः पैसा भी होता है कि हम्ब वर कभी हाद दोर्घ बार दीर्घ वर्ग मुनी हुए हम्ब परें काते हैं।

यह यात्रे संस्कृत कार्य की जातें में नहीं यह जाते हैं। हिन्हीं। भारत में यह भी देखा जाता है कि कृत गान केसे क्षा कार्य है जा न तो हुन्द ही धाने जाते हैं भीत न दौर्य हो, बाद उनका उच्छा-रण हुन्द भीर दौर्य देशी क्षेत्री के बीच वाले क्या है साथ है त्या है। यह दि कि हमारे भायाची ने दस प्रवाद के हुन्द भीत होते हैं। भारतिक क्षेत्रीयार की स्थातिक या कृतिक बाते कार्य किसी विक्र स्थित की मायन गारी की बीर दुने केस्त चहते हा देशाने

े । पद्म दिन पह सर्वा प्राचा । वर्ष पर सक् बा स्वन्ते अप हो (बोर्फ) पदा बाता है ब्रोर न प्रांतरा हुन्छ सा स्वर्ण हो।

चारी केही इसा नियंतित क्ये क्षति के लिये हेन्द्र हिन्द्र रे

· **



त्व हो क्यों न हो। कम में कम हम्य-प्या की महायता के विना दावि नहीं हो। स्कृता। स्यश्हीत स्वश्चत की सुना स्वीकार को इक्द्रानी तिक् व्यश्चत के अध-माध्या माना है।

- (२) ध्याकरता में द्वागं अवर है उस दीर्घ अप की जिसके उधारर हस्तु-पान की ध्योचा समय की तिसुनी साम्रा लगती है प्लुन त्या है, धीर इसे स्वित परने हैं तिय प्लुन-पार्ग है धारी ३ का कू पता दिया जाता है। किन्तु पिन्न गास्त्र में इसकी केई त्यार नहीं तिता।
- (२) तिहास प्राप्त में हम्य की लघु और दीय के गुरु कहते और दम्बेर स्थित करने के निये दी प्रकार के निस्न विस्था का देश करने हैं:—

इस्द (स्प्यु) ।

र्श्य (सुरु ।.... इ

(४) प्यान रहण चार्र्स्य कि हस्य क्षीर होतं क्रां चारचा यण्डन, हस्य चायवा हीतं स्वीतं पर ही निर्मार है। बीतं पर ही हत्यु स्वीतं के सीठेणा से यते हुय सीतुला स्वार की बाते गये [1 क्षेत्रे:—

साधारण पर्वे देश्य या रण्डुस्या च, इ, इ, ई,

संपुत्तः इति कार हीने बार है, उठ बार्यात् २ व्यः, २ है, २ ट वर्षे व्यान बार २ है, उच्च ट

र त्रस्य ११ में अस्म नार्यान ए असी स्था असी असी राष्ट्रीहरी।

इस्य क्यों में तुल स्टाएन के इस्य प्रेंग होर्स क्यों रे तुल स्टाप्ट कॉर्य माने जाने हैं। त्यार कोर्स पर राष्ट्र हुए रेजिए क्या नियम दिएए प्राप्ट के ब्राह्मार इस ब्राम्स हैं—



होते हैं तो छवश्य ही दीर्घ माने जाते हैं छीर यह केवल दीर्घ-स्वर ही के कारण, न कि उनकी सानुनासिकता के कारण ।

विस्ता युक्त वर्ण भी दीर्घ माने जाते हैं, किन्तु ध्यान रहे कि
िन्दी-भाषा में विस्ता का प्रयोग चहुत ही कम होता है।
क्षेत्रज कुद्ध ही ऐसे अन्द हैं जिनके संस्कृत एवं घुद्ध रूप
में ही विस्ता का प्रयोग देखा जाता अध्यय किया जाता
है। उनके भाषान्तरित रूप भी विना विस्ता के प्रचलित हैं।
जेसे:—दुःख धीर दुख, दुःसह धीर दुसह धादि। स्स्तिष्
कहुना चाहिए कि यह नियम हिन्दी भाषा में बहुत ही कम लागू
होता है।

य—पदान्त वर्ष विकल्प रूप से गुरु माना झाता है धर्मात् ध्रायद्रयकतानुसार यदि पदान्तवर्ण लघु भी है तो भी दीर्घ मान जिया जायना । जैसे—"भुवन भय भिटाने, धर्मसंरक्षणर्थ" में धन्तिम वर्ण "र्ध" पद के घन्त में होने के कारण, चूंकि नियमा-नुसार इसे दोर्घ होना चाहिये, दीर्घ माना जायना । व

र—उन दीर्घ बर्ज़ी की जी हस्य बर्ज़ी के समान पढ़े या बोले जाते हैं हस्य तथा उन हस्य बर्ज़ी की जी कुछ दीर्घ बर्ज़ी के समान पढ़े या बाले जाते हैं दीर्घ मानना चाहिये।

वैसे:—' शय मार्दि भा भरास हतुमंता ।'

्यहां ''में '' दीर्घ होता हुआ भी चृंकि हस्य देखा जाता है, य हो माना जायगा । इसी प्रकार—' छह्ह प्रलयकारी दुःखदायी

[ै] संजुक्तादा, विकर्तपुत, त्यकर कानुस्तार । वर्षः परान्त विकरण से, टीर्फ 'रकाम' विवार ४ "संजुक्तादा' टीर्फ, सानुकार विकर्यन्तिकम् । विक्रोपकार दीर्फ, परास्तरूथं विकर्यन ४"

नितान, ' यहाँ धन्तिम ' न्त " कुद्ध दीर्घ सा वाजा जाता है प्रान दीर्घ ही माना जायेगा। प्राचीन कवियों ने (विशेषतया मड भाषा पर्व ध्रवधी-मापा के कवियों में) पेसे हस्व वर्णी के देव हो बना जिया है।

जंसे—' धारिहुँक धनमल कीन्द्र न रामा । ' यदां प्रतिम ''म " की दीर्घ " सा " कर दिया गया है। इस प्रकार दीर्घ करने के जिये भायः दीर्घ भाकार, रैकार और ऊकार का भ्रमेगा देखा जाता है।

पेसे वर्षों की जी हस्य भीर दीर्घ देनों के मध्यस्थ स्वरंग द्ये हुए स्वर में वाले जाते हैं, जब मानते हैं।

नाट — संगीत में स्वर्श के बढ़ाने पर्व घटाने की पूर्ण स्वतंत्रता होने से हस्य और दोर्ध का पेमा सुद्म पथ गृह विचार नहीं हेत्ता ।

श्रावश्यक-नेाट

पेसे शन्दों के पूर्व का वर्ण जे। संयुक्त वर्ण से पारका होते हैं यदि उसके बेलने में संयुक्त वर्ण के कारण कुछ विशेषता या दीर्घता सी प्रतिमात होती है, लघु होने पर भी दीर्घ माने जाते हैं: जैसे:-जगन्नाय! सम्राय ! गोरीम नाय ! प्रपन्नाजकियन विषमार्तिहारिन् । महादेष ।। देवंग ! देवाधिदेव ! स्मरारे पुरारे यमारे ! हरेति ।

नाट:--ध्यान रखना चाहिये कि उन्हीं संयक्तवर्ण के पूर्व व वर्ण, चाहे वे किसी श्रन्तिम शन्द के वर्ण ही वर्षों न हा, जे। किस शाद के ब्रादि में बाते हैं बीर पेसी प्रकृति के होते हैं कि वे ब्रपर पूर्वगत शब्द के अन्तिम वर्ण के साथ शीय ही बाले जाते हैं औ इसलिए उसके। अपने उद्यारण से विशेष प्रभावित करते हैं, दी ने जाते हैं। यदि पेसे संयुक्त वर्ण अपने पूर्ववर्ती 'वर्ज 'का ।वित नहीं करते तो इसे वे दीर्घ भी नहीं बनाते। जैसे:—

> 'मुक्तको न यह कुट ध्यान था, तुम रुष्ट हो कर जा रहे।'

यह। पर 'कुद्द 'का ह यथिष घ्यान के घ्या संयुक्त वर्ष का र्षवर्ती है फिर भी चूँ कि उससे प्रभावित नहीं है : दीर्घ न होकर उस ही माना गया है। इसी प्रकार स्मृति, स्तवन, स्तृति प्रादि युक्त वर्णाय वर्णे। के पूर्ववर्ती वर्णे। के गुरुन्य पर्व लघुन्य का (बार करना चाहिए।

हमारा विचार ता यह है कि स्मृति आदि प्रान्तें के समु आदि एं अपने पूर्ववर्ती वर्षों का सदा प्रभावित करते हैं और इसी-तप उन्हें सदा दीर्घ भी बनाते हैं।

ध्यान रहे कि स्मृति खादि शन्दों का प्रयोगन्द्रस्त की छादि में सी प्रकार करना चाहिए कि मानें। वे लघु हैं। प्रायः ऐसे शन्दों हा उद्यारण प्रस्मृति खादि के समान करके कुद्ध नवयुवक होन करते हैं, उन्हें स्नके प्रयोग करने में विशेष विचार कर लेना बाहिये।

ष्यान रहे कि "प्रादि" संयुक्त वर्ण दे। प्रकार से येाले इतिहैं।

१—हित्य रूप में। जैसेः—"अपिय" वचन से सर्वधा है हुःख की सम्भायना" यहाँ "प्रि" का "प्र" हिन्द रूप में वाला ाता है। स्रतः इसका पूर्ववर्ती वर्त गुरु माना जादगा।

२—स्थामाधिक रूप में । जैसेः—"प्रिय झप्रिय" जोतां में खता था न भेद " यहाँ "खप्रिय" गत "प्रिय" का "प्र" झपने द्वेत्व रूप में न योजा जा कर फेंचल स्थामाधिक रूप में देवता



गग्

तीन वर्षों के समूद का चाहे उनसे कोई शब्द बनता हा या न बनता हो, भ्रथवा चाहे वे एक शब्द के हाँ या दो या भ्रधिक शब्दों के हाँ, एक गणु कहते हैं।

पक नण के तीन वर्लें। में से खादि, मध्य, श्रीर श्रन्त के वर्लें। की सुरता धीर जघुता के विचार में श्रर्थात् गणगत लघु धीर गुरु वर्लें। के व्यवस्था, क्रम एवं स्थान के विचार से गलें। के श्राठ स्य होते हैं।

मगण, यगण, सगण, नगण, भगण, जगण, नगण, घीर रगण । इन नामा के प्राद्य वर्ण लेकर निम्न सूत्र यनता है जिसके हारा गणा के नाम प्रारे लक्षण सरलता ने याद रह सकते हैं :—

" यमाताराजभानसलगम् "

इस सूत्र के द्वारा जिस गण का रूप जानना है। उसी के इसमें दिये हुये खाषातर के साथ धारों के दें। धार वर्ण मिलाने से धारीर गण वन जावना । जैसे:—मगण जानने के लिये सूत्र में धारे हुये "मा" के माथ उसके खाने वाले ता खाँर रा के। ले कर "मातारा" बनाधों । इसमें स्पष्ट हैं कि मगण में तीनों वर्ण धार्यात् धादि, मध्य धीर घन्त के वर्ण गुरु या दीर्थ हैं और मगण का रूप 555 इस मकार हैं । इसी धकार खीर गलें। की मी इसी सप्त

की सहायता से निकाला जा सकता है।

1		
गण का नाम	हप	उदाहर मा
यगग	122	चात्रमा
मगग	555	षुगयात्मा
भगव	211	मारद
समस्य .	C f f	कमज

सरस चिट्ठल गग्-कोष्टक

215 माजनी 115 रक्षशी नगरम् दंगप्ट 251

151

वरतर

समा के नाम यूर्व इनके मेर्री के बाद कारने के जिए उना ्यार्गम्स, हुम्म गरन मायन द**र** है:---

• सकि. मन्द्र, धनमात्र में, या, या, ता में सार्व कि । या जा, मा में सुद्र जातिया, मा, म सुद्र की ।

की वसंप्रतारेषु स्टब्स्ट्रेस्ट्रेस्ट्रिस्ट्रेस्ट्रिस्ट्रेस्ट्र

18

• मगण् में तीनो गुरु, नगण में तीनो लघुः
भगण् में धादि गुरु, नीके के ममानिए।
ध्रादि लघु थगण् में, मध्य गुरु जगण् में;
मध्य जाके लघु द्वाय, रगण् सा जानिए॥
ध्रम्म गुरु द्वाय ता, सगण् ताद्वि कंद्रें कथि;
तगण् में धरत लगु, यें 'रसाल' मानिए।
प्रथम के घारि शुभ, दोजिए कविन धादि;
ध्रानम के घारि ताज, सगुभ व्यानिए॥

गगा—रेवता—फल—आएक

	1.0 3.2711	11(1 41164)	
गस्य	द्यता	फल	গুনাগ্রুন
यगग	। . जल	घायु	গূন
भगग	, पृथ्वी	जस्मी	**
भगग	पन्द्रमा	यंग	**
नगरा	स्यमं	मुख	••
अगम्	स्पर्व	रेगग -	श्चराभ
रशस	प्रति	दाद	••
स्तारा	यागु	, दिदेश	. ,
मगरा	स्रकात	सृन्य	: ••
* ***		_ • • •	

केर पुर बच्च बक्ते रख बच्चा, केराम पुरबंदिनेशक संयुक्त ह



भत्तरं से रा गए अति हैं भत्त किन र से गएं। के लाग सह से क्या फल होता है, यह हम नीचे रे रहे हैं:— मगण + नगण = मित्र, हैं के लिखि फल रेत, भगण + पगण = दास, हानि गहें वाको। राए - लगए = स्पि, होत भोक्सर फल, तगण + जगए में = दरास, कहनावते ॥ नित्र गए सिद्धि, रास, रास विक्रिक्त -

करता उदास, मञ्ज काज वाल कर, चुकवि 'सरस' एसी गए की विवेचना है, देन्द्रन की बादि में सुगए कवि लावते ॥ देन्द्रन की बादि में सुगए कवि लावते ॥ दिन कर दोस मिलि विजय करावन है, मित्र की उदास बाय एपिन उपजावते। १६ सरस पिट्रल

नित्र ग्रेसर गतु गण् मिलि नित्र-नाग करें. दाल ग्रम्भ नित्र, काज सिद्ध करवायसे हैं दाल ग्रो उदाल निति पीड़ा उपजायन हैं, दास ग्रीर गतु गण् मिलि के हरायते।

मिर्ले जा उदास धार मित्र, ती है रंच फल. धारवी उदास, दास, बुख पहुँचायने ॥

नितन हैं जा पे छत्द सादि में उदास शाबु, गया जुलकारी परिलाम नित जानिये। शबु स्मीर मित्र गण मिति देत शूख कत.

ग्रुव बोर दाम में क्या का नाम मानिये प्र निजन है गयु की उदास जाये बादि मादि, ग्रष्ट्रा उपज्ञायन हैं, ऐसा द्वा स्मानिये प्र सामन 'सरमा' कवि इन्द्रन की बादि मादि

देश्य देश्य गामन में थे। विचार बार्गानये के माजिक कन्द्रन मोहि बरा, क्षेप गामरामा देखा। बाम कुल में 'सरस' कवि, यह विचार सहि लेखा

नाट — अनेक परण में गरी। की गिननी प्रथम कर की क्षणी दे। बाल में दो या पक कक्ष गरीद वय जाते वे परिचार दूर ते। जारू बीर पदि गुरु हुए तो। गुरु मान

कागुन वर्षी में से यांच वर्णी:---स. इ. र. स. मी (महत्त्रमध्य इत्याध्याः) के कायुन कागुन कोर कृषित कर्ष इस्ट कायुक्त को नीता दी शर्षि है।

' गणाचार-दोप-परिहार"

क्रमुमनागों के किसी हुंद के क्राहि में क्रिनियार्य कर से क्राने पर उनके दाय पर्य क्रमुमन्यान के परिदारायं पेसा कहा गया है कि उन गर्ली के सम्बन्धी प्रान्द देवना वासी हैं। क्रयवा महुल-वायी हैं। तथा यदि हुन्द में किसी देवना या देवी गरित क्राहि की स्तुति की गई है ती उसमें क्रमुम गर्ली का विचार नहीं होता।

 क भ्रान्ति प्रकार देवता वाची भ्रम्य मङ्गलवाची मध्यें के सादि में परि भ्रमुभ वल भी भावें ती भी कोई भ्रापित नहीं देखी।

ष :—विंद इसके क्रिकिट साधारत गर्न्टो की क्रांदि में क्रमुन या दुन्यासर कार्ये हो उनके होये होने पर क्रयबा यदि सम्भावना हो क्रीर किसी प्रकार की कृष्टि ने क्रांन्से हो, ने उन्हें दीय कर देने से उनके दोयों का परिदार हो जाता है।

ड्यार्म

"बियः पश्चिमीत शासितुम् द्यान्, ज्योदयोग पस्तेष सम्बद्धिः"

(माप गारव १ घरवाद १ वटेका)

यहाँ प्रथम गाए क्या है। बाह्य कहन हैं, बाहिश हारका हैवना मुख्यें खीर बार, बाह्य हैं का है, जातिश हमने सरदान असमेदाल गांद सर्वमहात्कर हैंपवायों हैं, इस्तित्य हैंगर कर निवास्त हैं। गया ।

[ি] ইবল' ও বাছত ভাইত উদু দলুতি আনদাত। উ দ্বাধী বিভাগিতালকু ভিতিক কৰিবলৈ জিলা

20

२ः—वर्णदोषः— "क्य

" रामहि चिते रहे धिक क्षेत्रचन" —गा॰ तुलमीदाम

यहाँ रा चागुभ वर्ण है, किन्तु यह देवतावाची शत्र है सभा दीर्घ है इमलिये सदीय नहीं, वरन् दीपमुक्त है।

इसी प्रकार "हा ! रघुपीर देव रघुराया !"

(२) लट कंप साला पंच बीम बानेक पर्ण सुमन घरे।

(3) रे ! कपि पेट्य देश्य सम्मारी ॥ (3) मृत्यत रि होरे, दीऊ रह रम धेरे तहां—

🖫) मानीपण मतीत वर साई ।

(1) मूला जा शकता है कैसे जा कुछ देखा सुना कहीं।
उपयुक्त सब उदाहरती में प्रथम वर्ण अभी दाखाहर है।
वे दोगमुक स्थानिय है कि वे या ते। देव-स्तवन में हैं या

बय में हैं, तथा हामाजा से साम्यत्य स्वतं हैं। वाट — प्यात रहें कि हामाग्रत गंगी वर्ष क्यायों में विचार मुक्त काफ में ही गिरोप कर से बाना प्रादिश में बारण में केल काफ के सामाज्य देश या हानों में हैं। विचार करना प्रतिन है सीर सामे नहीं। वर काफ में नाग पूर्व हामाग्रत कोंगे का विचार करना सामाज्यक सांत्वार्य है। सम्यत्व काण के सीम में इनका विचार करने

(स) मृत्यदि वस्तित स्तित प्रति ।

(व) इते हुई गायर बम् मला।

(म) रहतू मान समा हत्य विवासी।

(द) भले भवन तुम धायन दीन्दा !! इन्यादि !!

--रामायए

्रतः उदाहरते हैं। सभी प्रधम-वर्ण दृष्पानर हैं। किन्तु वे उस व्याप-कार्य की संध्यात दुन्तें। में हैं जो देवाधिदेव के सम्बन्ध में जिस्से में? हैं। चतः वे सब वर्ण नया इनके द्वाप उपेन्सीय हैं।

नुक

तुका—एक प्रशास का वह विशिष्ट कंप्यातुमास है, जिसमें मार्गुल, स्वर एवं स्वप्रजन-साम्य से इन्हों के बरतों के कल में हो स्वरोग जाती है।

संपालुक्षम सीर सुका में यह सामार है कि संपालुक्षम होई है तही सीर परमापन गाड़ी में स्वाहति लाता है। किन्तु तुका वरमाप्तर्गत शानी में ही स्वाहति का समायेग करता है, स्वतः संपालुक्षम का सेव स्वयिक स्थापन सीर विस्तृत है, जिल्तु तुका का सहूमने सीर निर्देशमांगावत है।

तुक से तारी में एक विधिव रेजकाना कीर मधुरता कालानी है। दिन्हें भाषा में राजका क्षणा प्रधार पर्वे क्षणार है। दो से संस्था में राजका क्षणार पर्वे क्षणार है। दो से संस्था में रास के दिवदीन कातुकान-कीरण ही का कानुत्व दें, क्षणी दिव्ही-भाषा में भी कानुकान-किया मिलानी है जिल्हा वह काली हाल में नमन हो के समान है। दिन्ही-भाषा को यह कावली एक मिलानी है। दिन्ही-भाषा को यह कावली एक मिलानी है। दिन्ही-भाषा को यह कावली है।

"दावर" में ने दारको दिवसमा बा है, जिसके सुदस कर स

हम मोधे हे हो हैं — सुना है सुराय कीन मेर हैं:—

रे:--- रणसञ्जूष रे:--- स्टब्स उस

३:- न्यर हुक

सरम विङ्गल

43

ध-ानम तुक:-जहां द्वाप्त के सबतों में साम के वी (श्वी पर्य प्यक्तनें) की एक ही समत में सामृति हैं। संयुक्त वर्णी का भी साम्य सामितत होता है। इसके तीन भेद हैं --

१:-- सम सरि:--जहां चरणे में की की सम ब्रापृति हो। जिनने ही ब्राधिक वर्गी की ब्रापृति

उतना ही भरिक भण्डा तुक होगा। नेट--प्यान रहना शाहिय कि जब की वर्णा की होती है। ना भावृत्ति के भावि में ना समना किन्तु भाव व

हाता है, ता आपूनि के आदि में ता नामता किन्तु आपे दित अपन्य होती है.— --- विपम मारि:—जहाँ हम्स् के वरती में उन

तत वर्णी की. जिनकी चातृति होती है, समता वहीं हेती। विषयता रहती है, ३:— कट सरि:—जटी करितता से सरसारत वर्णीरित

समना रिकार पड़ । ब--मण्यम नुब--विसमं स्थापक पती की सार्णि है कर बयल पेटर ही वर्ती की सायुनि हो, सीर जिसमें 3

बती में भी माध्य म दिन्हाई पह ।

दमके भी तीत मेर्न हैं १०० कमरिया मेर्नित-दमने संयुक्त बर्गी में साम

रू- चरारण मंत्रत-इसर्वे मंत्रतः वर्गो म गार रहण, कारि वे मुद्द में स्ट्रंग मी है।

ें प्राप्त राज्या करिए कि पूज करवारी के पूर्व के उनके से पर्णा के व्यवकार कि अरब दों। करिकार्यका के अरि कार्यकार के किसी के हैं कर में के रोज्या, कार्य करियोंक में दुखावरित के करिया। ं २:— स्वर-मीतिनः—लडी तुक के फेवन व्यंतिम स्वरेगं में ही साम्य हो। ब्योर व्यष्टकों में वैयस्य रहे ।

माठः—हिन्दों में ते। इस तुक को न्यूनता ही है, किन्तु उर्ह में इसकी बादुलता ही पार्व जाती है।

ा २:— हुर्मिलः—लिसमें चस्तों ये बेयल सब से बल्तिम वर्षी में हो सारव रहता है, बर्धात् चस्तान्त के केवल एक ही परा वर्त् मिलते हैं !

सः—निरुष्ट या क्रायम तुका—्डलः होतीः प्रवारः के तुषी से यर क्रायक विद्यवेगित का होता है। इसमें वर्णावृत्ति या वर्ण-नाम्य का वेर्ण्य भी विद्यम नहीं रहता ।

रसके भी भीत हुए होते हैं:--

्री—प्रसिल-तुमित्र—हाई। तन् के बृत्तः वरते में तो नुक मिलना को किन्तु तुक्त में न मिलना हो ।

२ — स्मारिनकानियाः —ित्ति तुक् के स्मारि क्यर या स्मारि स्मानक सम्मारे न सिक्ती है। यह साहे सिक्ते हैं। या स सिक्ते हैं।

३:— स्मर सम्बद्धिलः—दिसमें तुर के स्पित्स स्पर या सामार्थ न मिलको है। दर्गकाई जिल्लो है। दा न मिलको है।

राजे ब्रांतित निष्ठ गुरूर केर बाँउ किये रा राक्ते हैं --

- (१) सर्वका—असर्वे कार्यक स्वयंत्रक स्वयं सर्वेष प्राप्त् कार्वे हें।
- (२) रिस्पंगः—पूर्वं बाहित गमान्या यां जिन्यंत्र गार्ते के स्य में नहीं हैं, सीर केवल तुस जिलाने हैं दिय ही जनका



काल्द्रि गई पृपमान घरें झर हां तेरी वात चलाई। स्र श्याम श्रवगुन जिल तेरि लौटत वाम्हन नाई॥

श्याम" स्रदास "

गाइये गल्पति जगबन्दन ।

शङ्कर सुधन भवानी नन्दन ।

मादक प्रिय मुद्द मङ्गलदाता ।

विद्यान्यारिध बुद्धि-विधाता ।

ूमीगत तुलसोट्यस कर जारे।

वसहु राम-सिय मानस मारे 🏗

—" तुलसी दास "

्रसी प्रकार मीरा वाई एव धन्य रूप्ण-भक्त कवियों के पद् राहरणार्घ देखे जा सकते हैं। इन्हों की मजन मी कहते हैं।

गीत

इसमें चार पर, दे। इन्दों से यनाये आते हैं—ज़िनमें से दे। इ उल्लाला या राला के झार दे। पद दे।हे के रहते हैं झौर छन्न में स मात्राएँ टेक के रूप में रहती हैं : जैसे :—

> सिदि धोमुत जाग लिखा गाउल तें प्यारे! राम राम बंबने श्वाम!गापाल!मुरारे!! इपा रावरी सों हैंने सब विधि सब जानन्द्। रहा हारिका में सदा सङ्गाल हें शुजवन्द्!!

गाव साधका ॥ "सरस्र"

(चाँद के पत्राङ्क से)



ासंगीत यथिष काव्य से पृथ्य हैं से भी कथिता की संगीत से खाय ही सहायता लेनी पड़ती हैं।

्रहरू में छे। एक प्रकार था। संगीतात्मण लय-पूर्ण पाटप्रवाह त्ता है उसे हत्त्व भी गति पाटते हैं। इस गति या हत्द थी हालता में पहुत भट्टा भाग है, राति के

वेना निषमानुस्तर हुवे मात्राची पर्य पत्ते वा सुराविताव मेनुस्तर एक्टेपर भी तर्य बा जन्म नहीं हो सवाता । केने दीपावे में नेतातह शक्ष्म होती। चाहिके, किन्तु नेतातह मात्राची बी ही। रावक्या दे दीपार्च वी। स्वशा बी। कभीश पृति नहीं है। रावकी, रहि स्क्षम देशका विक्षित पात्र प्रशाह का गरित बा त्यपूर्ण नप्त ने हैं।

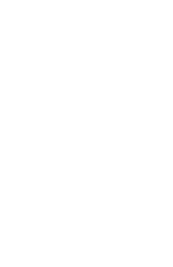
> ज्ञास क्या सुनि दण्य कराही। काल राम कहि कावा गाही।

इसके क्यान पर यदि क्ली अधायों एवं क्ली का किसी इसकी क्षाद का दे ने इसकी रहि से इनका सानर गुण्यापार कि यह दीवार्ष हो के रह कावगी (असे--

> मृति ज्ञास दशन क्रमा बराही। साल बहि राम राही सादन।

करा पर कियाँ। तरप की गाँउ होंचे वहीं होती कारण हराना पार कपार तथा की लिला रेटिया होंचे से या राष्ट्र के उत्तर मही होता पर्दा की किया देखा कारा कारण है।

न्द्र करा प्रदेश नाव्या काम काम करा करा करा करा किया कि वार्मिक के कि बाकि और रोग्य का कर्म करा है। वार्मिक के वार्मिक के वार्मिक रोग्या का क्ष्मिक के वार्मिक रोग्या काम क्षमिक के वार्मिक रोग्या काम क्षमिक के वार्मिक के वार्मिक क्षमिक का क्षमिक के वार्मिक क्षमिक के वार्मिक क्षमिक क्षमिक



ने। यही मने। रस्काय स्थीर सनिवार प्रतीत होता है, स्थीर सम्बद्ध सन्दा सन्द श्रीद नदीचे से न पहे जाने से सभीए सानरह प्रदा ा नहीं सिमा होता !

ह्रन्द या चूनि परिभाषा-पदरण

सन्द :---गरा का यह विशेष रूप हैं, जिसमें सहीतात्मक (सान क्ये) वदा विशिष्ट गति, साल या लय ते । डी.च जिसमें साव्यक्षी दे वर्ती दी तिर्गयित गताना के स्वाध विशेष-निष्यति के स्वाधान । यह विश्वास का संगुध्यान निष्यमित स्थवस्था डी.च विध्यान के एवं प्रश्नामाहित मा से हैं।

ेरार :- प्याप रणका काहिए कि सार में चयवन स्वर्तन तथे हैं। विना राख्ये यह यब प्रवास में गय में ही रूपान्नतिन ही तथेरा ।

च्छा :--इर्र कार्ट में रहाएव इन्हें में साम बीन होते होती हो जाते हैं, क्षानु दिन बन्ना में साम, बार, विलाग सीन स्था प्रहातन में खां यह साम्राज्य कारण है तियार वा दिन्यान राज बन दे बीजना की जानी हैं की यह का सम्म बन्दी हैं। इसमें प्राथमात्मात्मार शारी में काम में देन येत भी है। जाय ने होता ही माना जाना र की :---

> क्षेत्रातर्नेक्षेत्रातिः, सुद्देव सूनि सूनि, क्षेत्रकारकार वाच राज्ञ स्टब्स सूनि वाजास्त्रत्

ताय को स्पृति विविधाः कार्यान्त्रम् वस्त्रमा साम् हैं , स्पति कृतने हुन् (कार्य स्पृत क्ष्म सार्वा कार्य से कार्यों ता क्षमी तक्षम समाप्त कार्याप्तरीक समाप्ति कार्यों में स्थानस्था के सामग्राहिकता कार्याप्य विस्तृत्वे



्रः—चतुष्पद्गे-इन्द्रः—इसके झन्दर्गतचीषाद्गे, कवित्त, सर्वेण्या, रंगोतिका इंग्यादि सन्दें भाती हैं।

२:--पट पर्दा-हन्द:--इसमें झपय, बुग्डलियादि घातो है। इसो प्रकार ध्वय-पदी हादज-पदी घादि भेद भी हन्दीं के विगये हैं।

सित:--जड़ी पर सुन्द् के पदों की गति विजीप नियमी से चितित हो कर टहराई जाती हैं, वहाँ यति मानी गई हैं, क्यांस् रेजों के निर्दिष्ट या निश्चित गति के टहराय (गतिस्थर्य) के ति कहते हैं। इसी के ट्रुसरे माम विराम या विधाम भी हैं।

नाट:--पिराम एक प्रकार का चिन्ह मी होता है जिसे 'प्रेज़ी में कामा Comma कहते हैं। इसके मुख्य तीन भेद हैं, पद-राम, मध-पिराम भीर पूर्ण-विराम। इनके चिन्ह यो हैं:---

.: - যা । 🛭

यति या विराम पर जितनी, देर में रेपक कहा जा सकता. , उननी हो देर तक ठहरना चाहिए।

र्गानः-च्यत् को निर्वाधन धाराधारिकता का गृति करते । रसी गृति पर कृत् को संगोनान्मक मेनारेजकता कार धूनि ते सुखद माधुरो निर्मर है।

नीटः - पर्दो की संज्यातुसार हन्हों के उत्त भेद जी हसने इसायि हैं उनसे यह रूपट होगा कि हन्दों में पठों या करती की सन्या सम रहती हैं : किन्तु इसके साथ यह भी ध्यान में रराना गिहिये कि इनकी संख्या विषम भी होनी और हो सकती हैं. मो : - पद, या एक प्रकार के गाने देल्य भहन, यथा मृत्दान और किसी दास जी के पद तथा शीक्ष, हैने : - नन्द हम्म हम प्रमाद ति की विषम सन्दें। में शर्मी स्मुद्दिन मन्दर हम्म हम प्रमाद के तमाल कर वर् देश से रूप में हाला है और यह मध्येर हर स्वत्वाती वा शत्यर रहता है । विचारने को बात है कि मह सीर बाविता है। जिला कर वक्त सर्वात प्रकार की कविता या व काव्य की उत्ताल के जिल सायरणी, वर्ष प्रवास कविती में :

भगम विद्रात

रचना की है। मात्राको कौर वर्णी की गणना या व्यवस्था के कानुसार ह

वा प्रकार व होते हैं:--। --माधिक तथा:--शितमें मत्त्राओं की मील्या क्यीर प्र

 मारिक उन्तः — जितमें मात्राओं की सीत्रा कीर उने भागभ्या का भाग सम्बा जाता है, वर्गी की सीत्रा कीर स्पत्त उपनर्भव सात्री है।

2--विजय स्वयं :- वे स्वर्ध वर्षिक बदतानी हैं वि सारकार्य को मेल्या का विवाद के क्वत हुए (विदेशिः) क्वित कर्युकी प्रवादका का उनमें सूर्वय विश्वय प्रवाद की अन्तर है। विभागता का नोक्या और स्वयुक्त का विवाद की

बाना है इस कारोग प्रकार के देशों के दिए जील भीज उपनित हैंगी हैं।

१,—सम्ब —िकसर्व वाचाचा कारता क्यों की संस्था है करता व समान रहता है।

 --व्यव सम न्यं कर है, जिल्हा क्यम ग्रीत सुर्वण, वे विलोग भ्रीत सन्दर्भ सरणा में भाषाओं भ्रायक नर्तत की मेरे स्थान ला.

भारत-नागी बन्द है कि यह जिसस संस्था क्यो हो है है। यस संस्थापक वह जिसे हैं है। यस संस्थापक वह देनी हिन्द है कर्म्य दर वृद्धि कारान आक्रमा तन क्यों है अस्त वासे है बीर जिस्सा संस्थापक तप देने प्रास्त कीर सुर्वाम औ कार के (समान वर्ष या मात्रा वाले) होते हैं इसोलिय इसे नर्घसन कहते हैं।

३:- विपम:-वे हन्दें जा सम भौर भर्ध-सम न होकर घारी हों में वेभिन्य या वेपस्य रखती हैं।

निष्कर्ष रूप में यें कह सकते हैं:--

सब पद सम में सम रहत, विपम विपम में जात।

इन दोइन तें भिन्न जा तादि पर्ध-सम मान ॥ —स्माज-पिट्रल

सम-सन्दों के फिर दो मुख्य भेद किये गये हैं:--

२:- साधारक १:-- दब्दफ

नेट-पूँकि द्वडक घीर साधारत, मात्रिक घीर वर्टिक

सम तुन्दों में घपने पृथक् पृथक् रूप पर्व मात्राक्षी क्षीर वर्ती की संरचा पर्य उनके विधान निष्ट निष्ठ रखते हैं. इसिटिये इनकी म्यापक परिभागार्वे हम नहीं हे गरे हैं। इनके विक्रिष्ट लक्स झारे

> द्यन्द-कोप्टक छन्द

देविये।

, साधारस स० दि०—३

मात्रिक-सम-छन्द-प्रकरण

नोद्ध-प्रस्तार रीन्यानुसार द्वन्तों को संख्या धर्मस्य है सकती है, प्रस्तु हम यहाँ मानिक समास्तर्गत साधारण द्वनी है कुद्ध उदाहरण जा पिरोपनया ध्रन्यधिक रूप में प्रचलित यारे की है है रहे हैं:-

१---चौपाई

२११ २१ २१ ११२२ ईश्वर बांश कीव धाविनासी। १६ मात्रार्ये

> २११ १११ १११ ११ २२ चेतन धामल सकल सुख राशी॥११मा

चतन धमल सकत सुक्ष राशामारण २२२ ११ १११ १२२

सा माया यत्रा भवत्र गासाई। १६ मात्राय

१११ २१ २११ २ २२

वैधेड कीट मर्कट की नाई॥१६ मात्राये "रामायण"

" समायण चीपाई: – इस दुन्द के मधेक चरण में १६ मात्राय होती

नोदः--एस द्रन्द की रचना में गति पर विशेष धान चादिए १६सके बरण के भ्रमत में 'जनाय' ((15)) वा 'ते (55)) कराणि न रकता चादिए। यणि पेसा कोई नियम नहीं है एएनु ता भी बरवागत में हैं। ग्रुड (55) रकते वे द्रन्द को गति भ्रम्यों हो जाती है और पढ़ने में भी मशुर पड़ती है। द्रिन्दी-साहित्य में तुलसीदास की चीपायों की

38

मरसःगिङ्गल २—रोहा

रेतला:—इस मात्रिक-सम-इन्ट् में ११ और १३ मात्राओं पर विराम दें कर कुल २४ मात्रायें रखनी चाहिए, इसे काव्य इन्ट् री कहते हैं। किसी किसी आचार्य्य का मत है कि इस इन्ट्र के रारहाल के दें। गुरु वर्ल होने चाहिए, किन्तु यह नियम सर्वत्र हों पाया जाता। जैसे :—

जाके प्रति पद् मीद्वि, कला नैपियस गिन राखें । राजा भ्रम्यवा काय्य, हुंद ताकहैं कवि माखें ॥ नियम न लघु गुरु घेर, रखें भ्रम्ते गुरु देहें। ग्यारह पर विद्याम, किये श्र्मति उत्तम होई॥

३—हरिगीतिका

द्वागीतिका:—इस हुन्दु में १६ और १२ के विराम से प्रत्येक स्वाम रेट माथाएँ होती हैं, और चरदाल में एक लघु और क्षाह का होना आवश्यक है। इसकी गति ठीक रखने के ए प्रत्येक करन की पाँचवाँ, बारहवीं, उद्योसवीं तथा हुन्दी माथायें लघु रखना चाहिए: नहीं तो हुन्दु को गति विगड़ ती है। किसी किमो के मत से इसमें 8 सात माथाओं पर राम होते रहना चाडिये और १४ चीवह माथाओं पर दें। मुख्य पाम दिते के जिये रखना बाहिये। इस प्रधार केवज ४ बार स्वितिकां कहें वा रखने से इस इंड्रूड का एक चरक आता है। की —हिंगोतिका, हिंगोतिका, हिंगोतिका,

1401

ययाः— ये दारिका परिचारिका करि, पाजयो करूनामुपी। सपराध सुनियो योजि पटण, बहुत है। दोडी दर्रे ह पुनि भावुकुलभूपनसकलस्न,-मानविधिसमघीकियै। कदिकान नर्हि विनती परस्पर, मेम र्िर्क "तृल्ली

मेट:—स्स इंद के तीसरे चरण में "सन" तह ! पूरी होगों हैं, धीर "मान" शाद कट कर उसकी मार्के गिनती झन वाली १२ मावाझों में होती है, क्यांत् 'सने' 'मान 'के बीच में विराम पदना है। पेसान होता चारि! (पेसे हो होग की, क्यांत भाइनों व कहते हैं) है किन्तु क्वां हैं है कि कि वे १५ वीदित मात्राओं पर विराम बहां रह को दंद के उपविधास का खदुसरण किया है।

थ----ते<u>ा</u>मर

तीमरः—इस मात्रित-सम-सुन्द के प्रत्येक बरण में १६ हैं होती हैं और कन्त में एक गुरु, और लघु-वर्ण का होता कार्ट दें परा— तय चले वाण कराज । फुहुरत जलु यह कार्त कोच्या समय औराम । चल विशिष विशित विकार

५—सार

मार —१६ ग्रीट १२ के विराम से इस इन्त् के प्र^{त्येक} में २८ मात्रायें होनी चाडिएँ। इसके चरणान्त में दो ग्रुट^क होना कावश्यक हैं। यथाः—

भाग समय उठि अनक मन्दिरी, त्रिभुवन नाथ अर्गा उटी नाथ ! अब भार भया है, अपनि कर कलावे ॥

राजादि है। भी का विश्वत वर्षण स्थ साथे हैंते ।

उटा नाय! अब मार भवा है, भूपति द्वार युलावे ॥ " चन्दों के देवसे बचा। न्यति ग्रह, व्यतिन्यह, क्यत-वह और

कमल-नयन-मुख निर्दाख राम को, घानँद-सिंधु समार्थे। कनक-कलस सरज्ञ जल मारी, विपन दान करार्थे॥

नाटः—देखिये उक्त 'हरिगीतिका' में भी २० मात्राये होती के स्रोत इसमें भी उतनी हो मात्रायें हैं, किन्तु उनकी व्ययस्था में भेद होने से हुंद की गति पृर्श्वतया बदल गई है स्रोत उसका हुसरा हो रूप हो गया है।

६---कुण्डल

ु कुराडलः—१२ ब्रीर १० के विराम से इस झन्द के प्रत्येक वरण में २२ मात्रायें होनी चाडिये । इसके चरणान्त में दी गुरु-वर्णों का होना खबइय हैं । यथाः—

मेरे मन राम नाम. दूसरा न काई।
सन्तन दिग वैदि वैदि, लोक लाज खाई॥
ध्रम तो बात फेल गई, जानत सब केई।
ध्रमुवन जल सींचि सींचि, मेम वेलि वेाई॥
नोटः—प्रभाती कुगुडल का बह रूप है जिसके ध्रम्त में एक ही
गुरु होता है, इसे उड़ियान भी कहते हैं। यथाः—

टुमुकि चलत रामचन्द्र, याजत पेजनियाँ । धाय मातु गोद्द लेत, रूगस्य की स्नियाँ ॥

७—स्प-माला

रूपमालाः—रस इन्द्र के प्रत्येक चरण में २४ मात्रायें होनी शहिए, एयं १४ क्रीर २० मात्राक्षें पर विराम देना क्रीर क्रम्त में एक गुरु क्षीर एक लघु-वर्ण का रखना ब्रायरयक है। यथाः—

यत-मगडल में हुते, रघुनाथ जू तेदि काल। • चर्म घट्ट कुरङ्ग केा, शुभ स्वर्ण की सँग वाल॥



२:—राम ही की भक्ति में. घ्रपनी भलाई ज्ञानिये। १०—चर्यपेया

चवर्षयाः—प्रत्येक चरल् में १०, ८ व १२ के विराम से २० मात्राचें होनी चाहिएँ प्रन्त में एक सगए ध्रीर एक गुरु का होना धावरयक है—पधाः—

> ने प्रगट रूपाला, दीन द्याला, कैहिल्या-हितकारी।

हर्षित महतारी मुनि मन हारी, प्रदेत रूप निहासी॥

लोचन श्रमिरामा, तनुधनस्यामा, निज्ञासायुध मुज्ञ चारी।

मूपन बनमाला. नयन विज्ञाला,

भागासिषु खरारी।

नेगटः—मानिक समान्तर्गत द्राइक झन्द्र भी होते हैं. परन्तु वे अधिक प्रचलित नहीं हैं. भ्रतः उनके उदाहरए हम यहाँ पर नहीं दे रहे हैं।

मात्रिक शर्ध-सम-द्वन्दों का प्रकरण

ि जिस माबिक इन्ह के प्रधम चरए की मावार्थे तीसरे चरण की मावार्थों के बीर दूसरे चरए की मावार्थे चीये चरण की मावार्थों के बरावर ही उसे माविक-कार्य-सम्म इन्ह कहते हैं। इस प्रकार के इन्ह बहुधा दो ही पंक्तियों में लिखे जाते हैं अर्थाव् पहिला और दूसरा चरण एक पंक्ति में और तीसरा तथा चीया चरण दूसरी पंक्ति में लिखते हैं। यहां हम इन्ह कार्ति प्रसिद्ध माविक-कार्य-समन्दन्तों के ही उदाहरण दे रहे हैं:—



यः — धर्मा हजाहान मद भरे, त्रेत - त्रपाम - रतनार । जियत, मरत, सुकि सुकि परत, शेह चित्रवत पन बार ह

३—सारटा

मारटा:—इसके पहिले झाँर सीमरे चरण में ११ और हुमरे चा चीधे चरण में १२ मात्रायें होती हैं। धर्मात्र दोहा के चरणें :विपरीत इसके चरण होते हैं। यथा:—

जिद्दि सुनिरत सिधि रोय, गतनायकः करियर यदन । करतु अनुष्ठदे सोय, युद्धि गति सुन गुरा सदन ह

४—ग्रह्मस

४---उद्घातः। --- उद्घातः :--पिंढले घोर नीसरे चरण में घोर दमरे तथा चीधे

इस्त में रह मात्रावें होती हैं। जैसे :--

हे शरए दायिनी देवि ! तृ. करती सब का बात है। हे मातृ भूमि ! संतान हम. तृ. बननो. तृ बात है।

ि विदुरारि विज्ञाबन हिंग यसन, विष भाडन भय भय हररा । कह तुज्जित्तहास सेवत सुलभ, जिब जिब जिब शहूर शरङ ॥

न्द्र तुलसिदास सवत मुलभ, जियोजय जियजहुर शरू (द्वितीय)

नाट:—यपिष इस इन्द्र में २० मात्रावें भी मानते हैं तथापि प्रावः कि इसमें २६ मात्रावें भी एउते हैं और इसमें १३. १३ भाषाओं पर पति (विराम) देते हैं। देतीं निवम टीक हैं, किन्तु इमारी सम्मति में २० मात्रा पाला उत्ताजा-इन्द्र आपिक सरस-सन्दर और मनोहर होता है।

५---रुचिग

र्गवितः —ासके विषम-वर्तों में ११ झीर सम वरती में १४ मात्रार्वे होती हैं झीर धाल में दी गुरुवर्त होते हैं। डेसे :— हुरिहर भगवत सुन्दर स्वामी, सब के घट कौ ु 🤌 मेरे मन की कीज पूरी, इतनी हरि मेरी के मात्रिक-विपम-छन्दों का प्रकरण

जो इन्द मात्रिक-सम वा मात्रिक-वर्ष-सम व मात्रिक-विषय-दुन्द है, सर्थात् मात्रिक-विषय-दुन्द उहे । जिसके चारा चरणां की मात्रा-ध्ययस्था ग्रथवा नियम नियन हैं था जिसके सम सम ग्रीर विषम विषम चरण न नि अथवा सम सम मिलते हा, प्रस्तु वियम विपम म तयाच इसी के प्रतिकृत विषय-विषय मिलते हा। ग्रीर हर मिलते हैं।

ने<u>टः</u>—चार चरणां से कम तथा चार चरणों मे चरण जिल हन्दों में पाये जायें उन्हें विषम हन्द्र जातना पेसे इन्दों में जा बहुत प्रचलित हैं उन्हें ही हम हे रहे हैं।

१---कण्डलिया कुपङ्जियाः--धादि में एक दोहा, उसके पश्चात् एड दन्द जाड़कर ई पद्में (घरणों) का यह जन्द बनाना नाहि का प्रान्तिम चरण, राजा का प्रथम चरणार्ज होता है। की के प्रक्तिम चरण के कुछ प्रक्तिम प्रतर वा गन्द वहीं होंगे जा देहि के प्रादि में हैं, भीर राजा के प्रान्तम नरण में मात्रार्थं रहे । जैसे:---

जाकी घन घरती हरी, ताहि न लीजें सङ्ग । जा सँग राखे ही बने. ता करि राष्ट्र प्राप् ती करि राखु धापह, फॅरिफरर्क में। न कीत।

कपट रूप दिखराइ, ताहि की मन हर लीं

क्ह 'गिरघर कविराद. ' गुटक जेई निर्द्ध ताको । क्रोटि दिलाला देहु, हरी घन घरती डाकी ॥

२—छपप

हप्पण-मूस हप्द की झादि में रोला के बार पर बीबीस ीस मात्राओं वाले रखकर तदुपरान्त उल्लाला के दी पद और ना चाहिये।

होळ—तुपद में झे। उहाला-हुन्द्र इफ्छा झार उसके दूसरे (चीपे चरुट के झन्त में यदि 'नगए' (।।।) रक्छा (तो हुन्द्र की गति स्रिथिक रोचक यत पड्ती हैं।

यधाः :--

का—रोला की घरि प्रधम बहुरि उत्ताला राखें। ताकी द्यपय-द्वन्द नाम सबही कवि मार्खे । लघु गुरु नियम न कार, कर्डे कविराई कार्ड। कार्र रोला-क्वन्त माहि, राखें गुरु देवें ॥ उत्ताला के विषय महा कोई कवि पेसी कहाँ । इंटे नियो चरए में क्वन्त वरस, वर लघु रहाँहें ॥

वः—नीत्व निवित्त निसर्ग, तीव तम तीम तने थे ।
निविद् निर्माय नितान, नेष निस्सार बने थे ।
बाजा काजा सपन सपन था गगन गरवता ।
प्रत्य प्रभंवन पूर्वः बहिर्गमनार्थ वरवता ॥
कविरत होती नृष्टि थी. सृष्टि दृष्टि घातो न थो ।
भूरि भ्यानकता भरी. भूमि मत्ती भाती न थी ॥
×

तर्पन तन्झा टट तमाल तरवर वर्टु हाये। सुको कुल सी जल पर सन हिन मनदु सुहाये॥



सब में। किर नेह भंजा रघुनन्दन राजत हीरक माल हिये। नव नील यभू फल पीत भूँगा भलके प्रलब्ध प्रुंघरारि लिये। प्ररिव्द समान सुक्षप भरन्द प्रानन्दित लीचन भुट्ट पिये। रिय में न यस्या प्रसाद प्रमिल बालक ती जग में कल कीन जिये।

नाटः—सर्वेया हन्दों के झौर भी कई भेद हैं: यथा:—

भार भगण की किरीट, तथा आह सगण और एक गुरु की छुन्रों (दितीय) है। इनके अतिरिक्त सात भगण और अन्त में गुरु और लघु की 'चकेर', सात जगण और अन्त में लघु और गुरु को 'सुमुखी', सात जगण और अन्त में त्या और आत में त्याम की 'वाम', आट मगण और एक लघु की ' अरिपन्द ", आट जगण आर एक लघु की ' सुन्दिन्द ", और आट जगण आर एक जिसु की 'लघु की 'लघु की 'सुन्द रा' सेप्या हुंद और भी होती हैं।

वर्धिक समान्तर्गन दग्रहक-प्रकृग्ग

जिस पद्म के प्रत्येक चरण में धर्म संस्था २६ में आधिक है। उमे दवड़क यृत्ति कहते हैं। इसके भी हो भेद हैं (६) गण-यह (२) मुकक।

गग-चद-न्यदकः —यह है जिसके वर्णी की मंग्या गर्ण के षतुन्तर निवमित है।

मुक्तकः—यह द्राह्क है जिल्लामें वर्ती को संख्या तो तियत है है। किन्तु गर्तो का यन्धन न हो। ऐसे मुक्तकों में से हिन्दी में र् भनद्रस्य " यहने प्रचलित है। इसी की घनाचरी वा कवित्त भी र कहते हैं।

े नेगड :—यर्तिक युनियों में देश हुंद क्रमोर्ग माँ निनरीया " कहीं पु कहीं गुरु क्षयु ये नियम" से दनाये जाते हैं वे भी मुद्र<u>पु कह</u>-काने हैं।

स० दि०-४

सात्रि र-प्रस्तार

माधाय सुरु बार नचु राचा र पर पहिन हा राजा हु है (। इ रन विकार कमा विषय प्रतिया जा पुणां) है है (। इ रन विकार कमा विषय प्रतिया जा पुणां) है अब यहा हता हो है। सार पर खार हिंदा रहे ने बाब क्या विवास से हम सुका और स्थान कमा क्या पूर्वी को है।

मात्रा प्रकार को शाँव पहुँ हि यदि मात्राक्षा को समा न न प्रथम पंकि से उनने हो गुर निक्क दिवा दिवार की सावाम का तो हुँ हैं. किन पृष्टि सरणा दिवार को बाँ कि उन में पहुँ के कि प्रथम में की हो है पर के प्रथम के दिवार के स्वार्थ के कि प्रथम मात्राक्ष के तो कि प्रथम मात्राक्ष के कि प्रथम करते हुए एक मात्रा निर्देश के प्रथम के कि प्रथम के कि उनके ने कि प्रमु दिवार कर दिवार के कि प्रथम प्रकार के कि प्रथम के प्रथम के कि प्रथम के क

उक मात्रा)+ऽ(दी मात्रा)+ऽऽ(दी मात्राग्नीह 'सत्र' कर ४ मात्राये) स्वय मित्राकर ७ मात्राण दूरी '' ह तिल ये। जिलिये :--

[।] ३ ६ ६ ५ ७ सात्राएँ ।





यदि कोई संख्या न घट सकती हो तो उसे दोइफर उसकी पूर्ष-धर्ती अन्य संख्या लो। घटाने के पश्चात् नेप पही संख्या में ही पूर्ववर्ती संख्या घटाना चाहिए। जब घटाते घटाते ग्रुन्य वसे तब इस किया को वन्द कर देना चाहिए और यह देखना चाहिए कि कीन कीन से प्रङू घटे हैं। यह शान होने पर उन्हीं प्रङूों के ऊपर प्रथम पींक में (सब लघु चिन्ह धाले अस्तार के अनिन मए में) लघु-चिन्हों की उनके दुनिल् भाग बाले लघु चिन्हों से जोड़ कर ग्रुक्त चना लो और न्नेप चिन्ह देवी के त्यी ही उतार लो, बस यही उत्तर का अभीट रूप होगा।

प्रवः—७ मात्राओं के प्रस्तार में १३वां रूप क्या है ?

उत्तर- ।।।।।।। (प्रस्तार का प्रन्तिम हर)

१, २, ३, ४, =, १३, २१ (७ म

(७ मात्राझों की सुची)

प्रभ में १२ बॉरूप मौता गया है, ब्रता उसे (१२ को) २१ में घटाया (२१—१२==) ब्राठ बचा । इस ब्राठ में से २१ के पूर्व बर्ती १२ को घटाते हैं तो बह नहीं घटता. इसलिए उसे होड़ कर उसके पूर्वपर्ती इसरे बाङू (१२) का लेकर किर उसी प्रकार घटाते हैं तो धून्य बचता है। बस यहीं पर यह किया समाप्त होनी है और हम रेखने हैं कि घटने वाला बाङ्क = है इसलिए उस दो पंकियों में इसी में प्राप्त प्रस्तार-संख्या-स्वक दूसरी पंकि के = के बाङ्क के करण बाले लग्न विन्द की उसके दाहिनी ब्रोर के लग्न विन्द से किशकर एक दीर्घ विन्द बनाया ब्रोर शेष विन्द उसी के स्वी

र लिए. ना अमीर रूप इस प्रकार मिला:-

1111111

१, **२, ३, ४, ≈, १३, २**१

121111



ासी प्रवार उना रोप्यानुस्तर ७ गरों के प्रकार का ४ वो रूप व्हरूपा:—

5115

ो नेतः—प्रकार थे, रूपी थे। तुलसामक दृष्टि से तेत्रके पर रि.स्पर्शेत साता है कि प्रधेक प्रस्तार में, यह कितने ही वर्ली का पर्वेत हो, उसके विषम रूप प्रापेक प्रादि के भागों में समानता कर्वे है। तेरी जार पर्ण वाले प्रस्तार के ३, ४, ७, ६ धार ११ वें कर्वे है। तेरी प्रकार सम संस्थालों के रूपी में भी जानना करिंदर ह

रेंद्र भ्यान में सरके की बात है कि चर्तिया-प्रस्तार के सभी रुपें है बार्च की संस्था सभाग ही संस्थी, किन्तु मात्रिय-प्रस्तार में बेंद्र वर्ष सर्वप पेरस न होगा। उसमें वेचल प्रस्तार के प्रान्तिम इस है ही जहाँ सभी वर्ण लघुँ संसे, मार्ची की नियत संस्था में ही को मिन्नी ह

उद्दिष्ट

्विञ्जित योगे के प्रस्तान में दिया हुआ रूप कीन स्थान रखता है। यह यतलाना हो उहिए का रूप हेना है, स्थान प्रस्तार का केंग्रेश है दिया गया ब्यार यह पृद्धा गया कि यह कितने वर्षों के प्रमार का कीन मा रूप है—इस प्रश्न का उत्तर देना ही उदिए उद्याह है।

भेरि की पीति:—दिये हुए मध की निराकर उसके प्रत्येक दि है भीवे (सुरु धीर लगु प्रत्येक विन्तु के तले) एक में क्षिक दे के हिसुग-स्राह्म निराते आसी, इस प्रकार लिए जाने त्यु विन्ते के नीवे पाने स्राह्में की जीएकर याग में एक सीर है है । इस प्रकार प्राप्त होगी।



ो प्रकार पौच-वर्णी के प्रस्तार में ३२ भेद, ई वर्णी में ई४, में १२८ इत्यादि होंगे ।

प्रस्तार के भेदें। की मंख्या जानने के लिए यह नियम हेंग श्रीर सरज होता है:—

तने पर्णों के प्रस्तार के भेद्र जानने हाँ, दे। के (२) उतने । फरेा, इस क्कार प्राप्त हुई संख्या ही प्रभीए मंख्या होगी । धर्णों के प्रस्तार में तद्भेद-संख्यार्थः—२ के १ धान ۶٤=२×२×२> २×२=३२

तो प्रकार ई वर्षेों के प्रस्तार-भेटार्थ---5==××××××××××=={8

मात्रा-उहिष्ट

प्रा-उद्दिष्ट को रीति यह है कि दिये हुए मात्रा-प्रस्तार के यरावर समस्त संख्या पाले प्राट्व इस प्रकार लिखा कि वेन्द्रों के केवल ऊपर ब्रीर गुरु विन्द्रों के ऊपर ब्रीर मीव भार भट्ट रहें। तदुपरान्त गुरु चिन्हा के अपन चाले भट्टा गर कर झित्तमाङ्कृते घटाची, जी बाङ्क शेष संत्या वही रुमह होगा-वंसें:-यह जानन के लिए कि 15 5 ! रूप मात्रान्त्रस्तार का कीन मा भेद है। पहिले हो भी जन तो, फिर १ में प्रारम्भ गर, वां या चाइ नाइते हुए वसमस्य प्रष्टु जिया, विनये अस्तर की रामना गोएम त देंग्यी । सिर उन्हों पाट्टी में के क्षान में बाहर के जपर ब्रीप गाँन दानों ब्रीम माझ जिल्ली i i i war i mon de jijg,



जरर के विश्रसे स्पष्ट हैं कि चक्र के वार्य और दाहिने भ्रोर है उ.स., ल, भ्रोर ड. भ्रोर छो, फ. त. भ्रोर ठ नामक कोएकों में नव से ऊपर के भ्रा भ्रोर इ. कोएकों के समान १ ही १ के भ्राट्स लिखे गेंहैं। किर नियमानुसार द्वितीय पंक्ति के य कोएक में उसके ऊपर है भ्रा भ्रोर इ. कोएकों के श्राह्मों का योग-फल जो १+१=२ होता है रन्ता गया है। इसी प्रकार ३ सी पंक्ति के द भ्रोर य नामी कोएों ने रन्ते ऊपर के उ. भ्रोर प. कोएकों के श्राह्मों का योग-फल जो १०० के उ. भ्रोर प. कोएकों के श्राह्मों का योग-फल जो १०० के एक प्रोर के श्राह्मों का योग-फल जो १०० को हो हो प्राप्त के सी सी को सी है।

्रानी प्रकार किसी भी संख्या का मेरु वन सकता है। उदा-इस्ट है जिप हम ई वर्षों का मेरु चौर दे रहे हैं।



ति होती मेठ चल्ली का मिलान करने से यह स्पष्ट ही जायगा है कि पाले मेठ में ऊपर की ४ पंतियों ४ वर्ती के मेर की पिते के समान ही हैं इससे यह तात होता है कि न्यूनायिक मिलों के वर्ती की मीति, जिनमें बार्ट कोर से मेह समान होते है के में भी ऊपर की पंतियों समान रहती हैं।

नेक-प्यान रखना चाहिए कि बड़ी संत्या हो हैत में उमने म्यून क्या है सभी मेर मिमिजित रहते हैं—सैमे वहाँ है वहाँ है मेर दें, ४३ माहि हतों के मेर ऊपर की पंडियों में सम्मिजित हैं। मेर निक-१

इन पंक्तियों में जे। ब्राह्म लिखे गये हैं उनमें यह झात है कि उतने वर्णी के प्रस्तार में इतने भेद होते हैं, और चतुर्गुरु, त्रिगुरु, द्विगुरु खौर एक गुरु एवं सब क्रयु वर्ण वाले कितने होते हैं। जैसे :- ऊपर के ४ वर्णों के मेठ में सबसे या नीचे थाली पंक्ति के धार्डों को जोड़ने से प्रस्तार के रे मंख्या जा ३२ है जात होती है। तथा यह भी जात होता है. मेदी में में पक भेद में पाँचा गुरु झीर एक में पाँचों लखु वर्ण हैं(: वाले कोएकों से यही जान होता है) और दूसरे कीए चार गुरु और एक लघु पाले ४ भेद होते हैं फिर ३रे कोए के सार १० भेदों में ३ गुरु छोर २ लघु वाले भेद हाते हैं। ४ थे के अनुसार २ गुरु और ३ लघु वाजे १० मेद होते हैं। ४ वें बातुम्बार भी भेद ऐसे देवि दें जिनमें से अन्येक में एक गुरु बीर लघ हाते हैं।

माटः—मेरु में वार्र थार से ही सदा चलता वाहिये थीर 🗯 में नीवे की पंकि में बाई छोर के सब से प्रथम कीएक में १ का बाटु रहेगा, प्रस्तार के उस भेद का सुबक सममला तिसमें सभी वर्ष जिनकी निश्चित संख्या का प्रस्तार भेरें

जा रहा है, गुरु हाते।

चव उस केएक से दाहिनी और चलो और ग्रुठ वर्णी 🗬 मंख्या में एक २ की कमी बीत लघु वर्धी की संख्या में एक की युद्धि करने जामा, यहाँ तक कि पंति के दादिनी मार्थ सद से बंदिन केएक का जिसमें रेका भट रहेगा उस मेर् सुबक सममें जिसमें सभी वर्ण लघु रहेंगे ।

हिनने ही वर्गों के प्रस्तार में हिम्सी निश्चित सम्या में वाले सुरु झौर लघु वर्धी की संख्या जानने के तिए विना चक बनावे ही निम्न नियम का काम में जाना चाहिए । नियम:-

डिनने बखें के मेर को पंकि बनानी हो, उतनी ही संस्या तक कि प्रारम करके १ से प्रारम्भ करिनती लिख जाभी । इसों की निश्चित संस्था तक पहुँचने के प्रधात् सब से वाई ए प्रार लिखा। इस प्रकार प्रस्तार के निश्चित वर्धों को जाने तुस्तारों पंकि को संस्था १ पक प्रधिक होगी। भव । पंकि के नीचे वाई प्रोर से प्रारम करके (ऊपर की के सन में वार्ष प्रदूर के नीचे बुद्ध ने लिखकर) फिर बही को १ से लेकर निश्चित वर्षों को संस्था तक उत्ते इंग में जिल भी। रका:—

(६) छ वर्णीं के मस्तार की पंक्ति

हे 8 8 ३ २ १ १ २ ३ 8 % ह

ाने घनन्तर प्रधम-पंक्ति के साथ ने वार्र धार के र की धार नी पिंड में (तीनरी) उंची का रोगे ही उनार तो धार निर सत है धा म्यन-पंक्ति हुन्तर खड़ू से गुला करेंग धार गुलन फन में हिंगरे घड़ू के नीने वाले खड़ू का भाग हो। तिथा में धारे पिंड के घपनी तीनरी पंक्ति का हुन्तर खड़ू समर्भें। भाग नी मि तीनरी पंक्ति के हुन्तर खड़ू की (ती धारी भाग हुआ रेगान्योंत के तीनरे खड़ू में गुला करेंग, धार गुलनका में है गैनिर खड़ू के नीने वाले खड़ू का भाग हो। तन्याहु पंगी कैनरी पंक्ति का हुन्तर खड़ू होगा। यस धार स्वीधकार रिक्तिकी पंक्ति का हुन्तर खड़ू होगा। यस धार स्वीधकार रिक्तिकी घोर का धानिमाडू पक हम धार खड़ि मान स्वीकी घोर का धानिमाडू पक हम धार दिंगी।



ष्यान रहें कि याँई खेार के कोष्टक सब एक सीध में ही रहें। केंद्र दादिनों खेार एक एक कोष्टक को कमी के कारण एक प्रकार को सीपान या सीदी सी घने, किर छाडू भरने वाली समस्त कियाउसी प्रकार करें। जिस प्रकार धर्णों के साधारण मेर में की अर्ज है।

खण्ड-मेरु

क्यों को निश्चित संस्था से एक श्रिषक काएक घाली श्राड़ी कि वनाओं श्रीर उसके नीचे एक कारक कम धाली प्रीक्षियों कि नोचे एक कारक कम धाली पंकियों कि नोचे के समान चनाते चले जाओ. यहां तक कि सब से नीचे कि कोएक हो रक्खा । स्थान रहे कि वाई श्रार के सभी कीएक के मीधी रेखा में रहें, केवज हाहिनों श्रीर एक एक कोएकों किमी से एक स्वाही नी श्रीर तुम्हारा विश्व एकाधजी मेरु के वें मी उलटा रहें।

भ्रद्र सब से ऊपर की पंक्ति के प्रत्येक कोष्ट में १ का इबंक ^{कें}रों और घार्ट भ्रीर को खड़ी पंक्ति में २,३ ब्रादि सीधी ^{कि}ती के इबंक भ्रतिम केष्टक तक लिख जाग्रे।। यथाः—

६ वर्णें। का खंड मेरु

١ ٤	2	₹	٤	१	1
२	3	। ४	k	ŧ	П
3	Ė	१०	१५	Π	
8	१०	२०			
4	5.7				
É		_			

भव सालो कोएकों में छाड़ु इस प्रकार भरा, कि प्रत्येक कोएक है नैमृत्य भ्रमांत् उत्तर-पूर्वीय दिशा वाले अध्या यदि श्रपने कोण



भू के उसके नेत्राय केमा बाले बेएक के आहु में जोड़कर किया मनते साथ यह भी करना साहिए कि अप्येक दूसरी कि के बार ओर बाले जाड़ि के बेएक में ते. तीन, बार, पाँच कि के केन निवेत किया पर किसी केएक के नेत्राय केए, बाले कि के बीवें हैं। केएक ही पर्दी दाहिने बेएक से ही काम के बारिक कारा-



दाहिनों कोर के कल बाले सभी क्षोर वे केएकों में रिकेट्ट जिला, कीर प्रत्येक हुमरी एंडि के बार्ट कीर बाले कि केएकों में प्या कम १.२.३,४ ब्रादि की गिननों के ब्रोक किंता

एकावली-मात्रा-मेर

प्लावको भाषा-भेर का विश्व टीक वैसा ही बनाओं हैसा किको को भेर का बनाया जाता है, केवल हमती कीर बिरो-भा की कि सब से ऊपर पत्र बेएक रमती कीर नीचे के किया निमा पीड़ियों के हा भागों में विभन्त करेंग कार्य कि सब पीड़ की दी हो पीड़ियों बना लो। बार्र भोर के



कर्य की उसके जिल्हा केला करने केरात की कर्य में लेगा कर किया है। विकेश करने साम पर भी काम व्यक्ति कि गानेश कुरियों किया के कर्य कीर काम काफिकी केरात में लेगा क्षेत्र करता कुरिया किया के किया किया है। उसके काफिकी केरात के किया केरात करने केराय के किया की केरात केरात काफिकी केरात केरी काम केरा करने मेरा काफिक करना—

हाहिनों स्रोट में काल कार्त स्टांग कार्य में केंग है। में रेषे सह जिला, डील अधिन हास्तों केंग के अही मेगर नार्य प्राप्त केंग्होंने में बादा साथ है, में के, कार्यह की जिलाने के सीक जिला।

द्राप्ती साप्ता है।

प्रवाहणी आक्षा कर किश्रणीया किए हर बारानी उत्तर विषयिक सर्व मेरा मार स्वाहण आप है, विषय देवनी होता हिंद एक करेर हैंस अबसे के इस्पर पत्र विषय कश्रण होता वर्षित हैं केरिकी करें क्यां स्विति केर केर अपनी कि विषय करें करान्य प्रवासका स्वीत करें हुन केर स्वित्तर क्या की करें करें



संख्या में पृद्धि झीर लघु मात्राझों की संख्या में न्यूनता करनी चाहिए।

खण्ड-मात्रा-मेरु

खरड मेर का चित्र पकायजी मेर के चित्र से ठीक उलटा यनाधी धार सब से नीचे दी फीटक देकर सब पंकियों के दाहिनी धार दी दो कीएकों की कभी रक्खा। सबसे धन्त में एक फीएक भी रक्खा जा सकता है। बाई धार के कीएक पक सीधी रेखा में दी रही चाहिए। धव इसमें धड़ु इस प्रकार भरे। कि सब से ऊपरी धार वाई धार को पंकि के सभी केएकों में र के खड़ू ही, किर खाली कीएकों में एक कीएक धीर उसके नैक्य कीए बाल कीएक के धड़ू की जीड़ कर नैक्य के पूर्व बाल कीएक में रक्खा। धव दाहिनी छोर के सब से धन्तिम कीएकों के छड़ू ही प्रस्तार के धनीट खड़ू होंगे। खयड ने के मी वही काम निकलता है जी पकावली मेर धीर मेर से निकलता है।

पताका

जैसा कि हम प्रथम कह चुके हैं, मेर-चक्र से किसी संख्या वाले वर्ज-प्रस्तार में इतनी सख्या में द्विगुरु, विग्रुष्ट एवं चतुर्नुरु के कर होते हैं, केवल यही हान होता है; किन्तु पताका-चक्र की क्रिएम में देसे रूप प्रथम, द्वितीय तृतीय झादि किस स्थान में स्थित हैं। इसके बनाने के विधि यह है कि जितने पूर्णों की पताका चनानी हों, उतने को विधि यह है कि जितने पूर्णों की पताका चनानी हों, उतने को वाले मेर-चक्र की पंक्ति जिल्हों। उसके नीचे कोएकों की इससे पंक्ति वना कर उनमें चाई छोर से प्रारम्भ कर एक (१) भीर उससे दूनी गिनती जिएते चले जाओं। प्रथ प्रथम पंक्ति के जिल्हों हों उससे नीचे उतने जिल्हों हों उससे नीचे उतने

ही कोएक यनाध्यो । अय इन कोएकों में मट्टू यो मरी कि-द्वितीय माडी पंक्ति के प्रथम एवं द्वितीय काएक के माड़ों की जाड़ कर के।एकों की द्वितीय खड़ी पंक्ति के सुतीय कोएक में रक्ला। तत्पधान् इस जाड़ से प्राप्त हुए ब्यूट को तथा दितीय भाड़ी पंक्ति के धारों शक्ते कोएकों के ब्राट्टो में जोड़ कर नीचे के कोष्ट में रक्तो। श्रीर यही किया श्रीयश्यकतानुसार करते अप्यो ।

व्यापक-नियमः---

1 80	10	2	11
੪	5	23	३२
य	फ	জ	ह
1.5	१२	२५	Г
U	र्ष	२८	1
10	122	30	1
122	20	32	Į.
133	२२	1	
7 %	1 23	1	
3,8	1 3 5	1	
21	२७	1	
29	₹.	1	
	ध य	४ ८ य फ	8 c 55 2 4 3 5 55 55 3 5 55

जी श्रॅक जीड़ने से प्राप्त हो उसे समें जी देश श्रीर प्राप्त श्रं**क** को दसे जाड़ी फिर हमें यसे जाड़ा हमी प्रकार करते आश्री जब तक कि सभी केश्वक पूर्ण न टा आर्थे। एक खड़ी पंकि के पूरी हो जाने पर दूसरी खड़ी पंकि दें। खीर उसके कांग्रक मेरी, किंग्तु स्मरण रक्तों कि जा श्रद्ध पहिले एक बार कहीं था शुका है बद्दी बाडू यदि पुनः शप्त हो ता उसे न रक्ती धरन उसके मते वालों विवती का सङ्घ लिखें। और उद कमी पेला हो वनों डेव्हमें का कम व पीटा को आदि प्रथम स केट से प्राप्स हैंडेगा। यम उन्ह विवन में दोलरी पीटा वे म से ४ में कोटन में

रेक प्रमुख्यान होकर लिया जाना चाहिये या किन्तु पर श्रृष्टु विरोद पत्ति के चीपे कीएक में आ चुका है अन्य हतके आग राज प्रमुख्य कहा जिस्सा गया है और तन्यक्रत्य पांचर्य कीएक में किया व पत्ति की आहि से आहम्म की पति है और १० + १

ने किया है पीट की क्यांत्रि से बारम्भ की पी है और १०+१ (स)=११ सिखा गया है और किर ९ वे कोटक में १७ का ब्युटों पहिले का बुका है नहीं सिखा गया बच्च उसके क्यांत्रे के ब्युटें निवसानुसार १८ इसके स्थान पर दिया गया है, और

खड़े होने किया हिर व पीट के स बोक से मापमा हुई हैं और रू-१=१६ की संख्या ही गाँ हैं । इसी मकार भीर सभी बेटकों के विषय में मो बातना चाहिए।

नेत्र-स्त चह से देवने से या सार हो जाता है कि पंत्र क्यों के प्रस्तार में बितुत बाते १० स्त, क्येंग्रे, हैं. या १० सर्वे स्वादि स्वातें के हैं। प्रवास कर की सहायता से उनके प्रस्तिक मार 11125, 11315, 13115 सरवार से

मात्रा-पत्रका

निषेश सकते हैं।

तिश्च मी वहीं उत्योग है हो वर्त्यताला का है और इसके रात्रे की विधि में हैं कि जितने मानाओं की पताका दतानी है। रिल् ही मानाओं के मेरा की पति जिल की किए जाने नीने

ि १० मात्राक्षा के महका पाँच १३८ छ। १४४ विकास मेरे शेव्ह बनाओ। यह प्रश्त् ह्यात पर प्रस्तार की समस्त मेर्या के मुक्ति करते वाले अपूर्व तिम्हें सूत्री करते हैं (१.२.३. पि.हें) तिस्ये। आड्रो पंडि में सब से दारिनी और १ का अंत्र स्टता हे आर यह मुख्यित करता है कि सभी तयु संघा वाली

5

सेद ८ / एक) टाता है आर बह सदध प्रान्तिम रूप हो हाता है, भूतः उसर नान सन्याका अस्तिमाहुटा तिस्या। किर द्वितीय पंकि

करत र इस प्रकार नग कि मुख्य के सन्तिमाडू म **से मंगी** यारि प्राप्त एक भरक प्रश्ची आर या शर्य बच्चे आहें। की रण र नोतित्वत नाझा । दिगुर स्वर काष्ट्रको पंक्ति **मस्ते** हाँ ता श्रांतिसार संबंध सद्भार जाता की प्रदासा आसे प्रवे हार १, को कारक मिलियत नाथा । इसा प्रकार विग्रुक सुबक

के राहणका का तो पहर्मुह साथा वाल क्या की सुविष

सरस-पिदल

क्षा कर राजियान प्रसा क्यां-

सात भाग भा को पत्रक्ति।

1111

नियं र १६७ पर २५ अप रहाः प्रदूरवारा ने निावा **आया**।

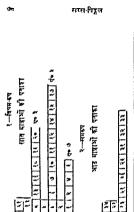
परि ४ । रणका संस्थाना हुन से तान तान ते। हुक संस्थानी जर प्रणाह का प्राचित्र का स्थाप स्थाप पान पान का का स्थाप है। जिस्सा के प्रणाह का प्राचित्र का स्थाप स्थाप प्राचित्र का स्थाप का स्थाप का स्थाप का स्थाप का स्थाप का स्थाप का

माश-पताका की इसरी रांति

मान सूर्यों में जहां पर १, ६, ६, ४, भ मारि के मार्ट हैं उन्हें के में उपन की जिसे होता कि काए मेर के मार्ट को विजेतन में निर्मात में एक एक कोता कार्जी परा रहें । मायद्यक कि तीन में एक एक कोता कार्जी परा रहें । मायद्यक कि तीन में एक एक कोता कार्जी परा रहें । मायद्यक कि तीन में को कोता को सात हमरे को मान कर हमरे के तीन में । को कार्जा प्रांपती पत्ति के मान (६) में में २, ६, के में पता कर बाद हम मान्य में तीन मार्ज मार्गी मार्जी में में २, ६, के (द) में बादियों मेर्ज पान १३, १६, ह यादि मार्जी में में २, ६, के पता कर मार्ज भीता हमी मार्जी मार्जिक में पता की पूर्ति करें। । के दें भाग कर मार्ज भीता कि कि मार्जी मार्जी पुर्विक होने पाने कि स्थान कर मार्जी कार्जी कि कि मार्जी मार्जी पुर्विक होने पाने कि स्थान कर मार्जी कार्जी कार्जी कार्जी होता मार्जी पुर्विक से होने पाने कि स्थान कर मार्जी कार्जी कार्जी कार्जी कार्जी पुर्विक से होने पाने

तिक-सम्भाग की पत्रावा में द्वितीय पंति के स्वक्रू है के राज्य ही मदम पंति का १ प्रदेश। । स्थार--

विश्र हुमरे पृष्ट पर देखा।



J face par ne ije

13.



TE 138

ř

\$3

मन्द्री यह स्व. है तिसे इस प्रश्य को शाविका बहु सकते को कि इसरे हेग्ले से शृति के प्राप्त प्राप्त पर्या तहा और सुरू दिने सगणाधी का समक्ष्य जीता शावा है।

को सगणाधी का समक्ष्य जीता शावा है। को तियोग — व्या कार्य शावा है।

को तियोग — व्या कार्य शावा हिन्दे पर्यो की मकेरी

को है तिर समाणाप्त कार्यों है हाम रेप की कार्यों की कि सकेरी

कार्य कार ति । प्राप्त प्रति से (तक्या कार्यों) है से

कार्य कार ति । प्राप्त प्रति से (तक्या कार्यों) है से

कार्य कि शावा हिन्दे प्रति से शावा कर हात हुनी निवर्ते

कार्य हुनसे परित से शेर से प्राप्ता कर हुना हुनी निवर्ते

को के सुनव्या कार्य के स्वां से प्रति की से साथ प्रदर्भ परित के

हैं से सुनव्या के स्वां की कोरों के साथ स्वां से सेसा पर्दी की

हैं से सामकार्य से स्वां कि सेसा सीस परिवर्ष परित के

हैं से सामकार्य से स्वां परित की सेसा परिवर्ष परित के

दर्दरी

^{हे हो}ने स्थम पंति को उत्तरी ही सीच्या धाती रहते पंति के है तेर में त्रीवे की और चारते हुए उत्तर में बताओं।

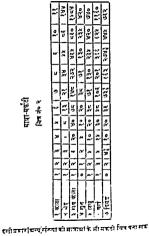
वर्ग-सर्वरी

ें देः—इसी प्रकार विश्वते । धर्मी । को । सकटी बनाना है। उपः वैतिस हारा पनार्ग वा सकती हैं :—

े को के प्रत्यान के सक्कार में बता मार्थाद सम्बन्धी प्रथ

मात्रा-मर्देश

िंग मर्जेटो के यसके जो सीति यह है कि प्रथम एक भाषत रिकारी हों के सात भाग जोगे भीत सम्बर्ध के उतने माग



सरम-पिट्गल

= ?

सस्त-चिङ्गस्त

हम मयम हो यह कह बुके हैं कि दिन्हों में कमी कमी परिशिष्ट होते बद्ध या स्वर के हस्त गया कमी किसी हस्त स्व राज पर भारत का धरन गांचा करता । करा। धरन पन पर्देश होंचे की सीति करमा कर्मी किसी वर्ष की होंचे हत्त्व होती है मध्यस्य स्वर से द्धारण करने का संयोग ह हें तुरा मात्रानात्मां साई से हेंस देशांसक-तार्म्बाएंस हें पुरा मात्रानात्मां साई से हेंस देशांसक का स्वात क हारिए चारा हास्तर मी एड़े हामी है। हमार हाजारत स्वायास हरिए चारा हम्मिर मी एड़े हामी है। वशावत स्वायास इस्तर्भ बावाना क्या व्याप्त के देख विराय पर हुन्द्र विरोध स्थान नहीं दिया और क्रमिन स्थान न द त्रक पर दुन्त (बनाव न्यान नात । स्था कार अस्ताव र स्वाका (बन में देस कर महा है जिसका उद्यास्त में देव हुन्य की मध्याम स्ताम होता है। कड़ावित हता कारण के का का करवार वाम के साम होता है। कड़ावित हता कारण के करवार का करवार कारत है स्वावाची में हम हमरे हैं हैं पड़ ही पड़ेमें हैं ही कपर दें। इंस्का है।

्रें कि हमारे नापा-विशान में प्रथम के हैं भी कार्य वंशानिक कर में नहीं हुआ के र कर्ण माला में नवीन परिवर्गों के वंशानिक इनके ब्रुट्यार पुनरकार एवं सुधार नहीं किया गया, रही कार्य है कि यह विशय ब्रामक्रोणित ही पड़ा रहा किया गया, रही कार्य किया करें कर्ण

विन्ती की वर्षमाला अधिकांत्र में वहीं हैं जो संस्कृत की वर्षमाला अधिकांत्र में वहीं हैं जो संस्कृत की वर्षमाला अधिकांत्र में वहीं हैं जो संस्कृत की वर्षमाला के किस प्रतार कि सिका प्रतार किएतों के के अपनी के किस प्रतार कि सिका प्रत कि सिका प्रतार कि सिका प्रतार



निस् भाषा की पर्ल-माला की कित्यय पर्ली में नये मुपार पर्व संस्कार किये गये हैं, नया धानी धीर नये मुपारें की धायदयकता रखते हैं। इन नये मुपारें में में एक मुभार धायया धायिकार इ.इ. इन्य पर्व दीर्घ स्थेरों के मध्यस्य स्थेरों की कल्पना फरना भी है, जिसकी हमें इस स्थान पर धातीय धायदयकता प्रतीत होती है प्येशि इसका प्रमुख सम्बन्ध हमारे काव्याधार झन्द-शास्त्र से हैं।

टास्टर सर जार्ज टियर्सन के जिन्होंने हिन्ही आप में बहुत रोज पूर्ण पेतिहासिक और पेतानिक कार्य किया है. ऐसे स्वरं की धापस्यकता प्रतीत हुई और उन्होंने ऐसे स्वरंगे के बौदे जी भाषा की वर्ण-साला के द्वारा स्थल करने के जिए धापनो चौर से कुड़ नये विधानों की कल्पना की । और भाषा की वर्ण-साला में भी ऐसे स्वरंग के नये रूप दिये हैं:—

। ईखा, लिम्हास्टिक सर्वे ग्राप होटिया भाग ३ घ० १

डाक्टर साहय की इस कहनता में एक यात यह कटकती है कि उन्होंने 'व' के विशिष्ट रूप के लिए इसके रूप का उत्तरा कर के रुक्ता है आर्थाम् 'प' के रूप का विज्ञान रूप ही उपयुक्त महभा है और 'ओ' के विशेष रूप के लिए 'ओ' के उत्तर काली साथा की बाई से धुमाने की अपेका होहिनी और से धुमा कर ही लगा उसे उत्तरीयत 'रेफ' का सा आकार हैंते हुए रन दिया है। हमें इन स्पेंग की अपेका पृज्यकर थोयुन के रामशहूर औं गुरु

[ै] सम्य भारताओं से सार्थ पुर कुर राष्ट्री से हुए नहीं से लिन की हमें पूर पर्यों से एकने को सार्थने एप्लिसन करीं में बढ़े बुदारी से बाने की मरसकता है।

[.]t The Linguistic Survey of Ind

मग्म विद्वान हत की शश्यावली येमे परिष्टत

ा अवस्थान संविधाति की की बात र राजन का जान में **हस्य प्रश्ने ही प** ्राहर राजा है, ऐसी दशा में . तत्त मनमा श्रामिशास्त्र है। ं र राज्य र अवीत्र है। ती है ा विकास साहित्य में र रेपनक परिने बहुत ा शच्य रह मुणा दे रायती उराने हैं। तः नाम्बद्धन शस्त्रावतीः । माथ बाजना ही 🕟 ः क्याचि, यरिष्टन a z e an afent-

क्षान्य वाषाची के

	(qm	• ' वर्गाम राजा है । संस्कृत की श्रम्यावसी <mark>येसे परिष्हत</mark>
1	0.	तर भग र है कि उसके अध्ये में हरूच एवं दीर्घ के बीग

· चारण हो सायप्रयहता हो नहीं पडती, इसीतिए बन १ १ ११६३ १ मा ना मा ना म उपक निमाणकर्ता विज्ञानी ने

रागर र तर राज्या वायक माना की वर्ण-मान्ता में सरीय 🗝 । । वरण इ. अन्यान्य रहता है ते। उस्य भाषा की शार्थी

. तः स्पर पाचवा साचा की किसी भी • • । स्वर्क्तना सामाकी वर्णमाना में

· · · मन द्वार क्षेत्रं क्यों

•= । चाप्तिक मारा में

a ser un nut Effent

निय भाषा को वर्ल-माला के किनएव वर्ली में नये सुपार पर्य मंस्कार किये गये हैं. तथा धमी धीर नये सुपारों की धावश्यकता सबते हैं। इन नये सुपारों में से पक सुधार ध्रयवा ध्राविष्कार कुद्ध हस्व वर्ष दीर्घ स्थेरों के मध्यस्य स्थेरों की कहरना करना भी है. जिसकी हमें इस स्थान पर धातीय ध्रावश्यकता धतीत होती है प्रवेकि इमका प्रमुख सम्बन्ध हमारे काव्याधार छन्द-भारत में हैं।

टास्टर मर जार्ज हिय्सन का जिन्होंने हिन्हों भाषा में बहुत काज पूर्ण ऐतिहासिक और पैतानिक कार्य किया है. ऐसे स्वरेंगे की श्रावश्यकता प्रतीत हुई और उन्होंने ऐसे स्वरेंगे की श्रीवेज़ी भाषा की क्ल-माला के द्वारा व्यक करने के लिए अपनी और से कुड़ नये विधानों की कल्पना की ; और भाषा की क्ल-माला में भी ऐसे स्वरेंगे के नये कुप दिये हैं:—

ां देखा, लिंगुरस्टिक सर्वे स्नाफ रंडिया भाग ३ स० १

डाफ्टर साहब की इस कल्पना में एक बात यह खटकती है कि उन्होंने 'ए' के बिनिए रूप के लिए इसके रूप का उलटा कर के रूपना है अधात 'ए' के रूप का विजोम रूप ही उपयुक्त समभा है और 'ओ' के बिनेप रूप के लिए 'ओ' के अपर बाली मात्रा को बार में धुमाने की अपना दाहिनी और से धुमा कर ही लगा उने अधीन 'रफ' का सा आकार देते हुए रख दिया है हमें रत मेपी की अपना पुज्यहर श्रीयुत एंक रामग्रदूत जी टार

[ै] बन्द बाराओं से बाते हुए हुए शारी के हुए क्यों के लिए -को क्यों के सके कर्ष वापने उपनिष्टन क्यों में बचे कुणां है काराक्रम है।

^{*} The Linguistic Survey

रत । व 🕟 १ १ १ १ १ है। सहस्य की ग्रंप्यायली वेसे परिष्कृत

ा १८८ ११ के काल गांची में स्थल संस्थ की घे के बीच व १३१ ६ १६ १ए इर ६ मध्यक्रमा हो मनी मन्त्री, इसीनिय करावर वर रक्षा वर्ष र त व वस्त्र विमासका विद्वारती में

•

प्रतेत्र । १९ ९ स्ट्रा । इ.स.पा को बता-माता में सहिव र । । १ व व । । १ वर्ग दे तो प्रश्न सामा की शब्दी

ं र भारत गडा सामा के किसी भी

रार 👊 १३८ सध्य की वर्णमानह में

र १ मन्द्रश्यक्ती की भी बाद

े । स्थान उत्तर वर्ष परिमान र १०१ सन्दर्भार वीर्ध स्वरी

ं । । । ने अन म हत्य वर्ष देशि ं अ ं पेसी दशा में - । । नामा अनिवास्य है। ं ः ६ वतीत होती है ं पनका साहित्य में रतक व्यक्तिय वहन

ामच स्थलका है राधनी बढाने हैं। र तरध्यत शब्दावनी ा माथ धामरार हेर ा श्वाकि, परिष्यत

ं प्राप्त । । चन्य सायामी के

स्वतः । सः १००० ५५ सः आधुनिकः भाषां में

निय सापा की वर्ग-साला के कतियव वर्ती में नये मुधार एवं संस्कार किये गये हैं. तथा क्षमी और नये मुधारों की आवश्यकता सवते हैं। इन नये मुधारों में से एक सुधार क्षपया काविष्मार कुद्ध हस्त्र पूर्व होंगे स्थेगे के संध्यक्य स्थेरों की कलाता बाला भी है. जिसकी हमें इस स्थान पर क्षपीय कावश्यकता मानि होती है क्योंकि इसका अनुख्य सम्बन्ध इसारे काश्यावार द्वार-आफ से हैं।

टाक्टर सर बार्ब द्रियमंत्र के बिन्तेने हिन्ही भाषा में पहुत बिब्ब पूर्व पेतिहासिक बीर पेटानिक काय किया है। पेसे स्पर्धे की बाबश्यकता प्रतीत हुई बीर उन्होंने पेसे स्पर्धे के बोदेड़ी भाषा की बर्चभाला के हाना प्यक्त करने के जिब ध्यपने प्रीर से हुन्न नये शिवानों की कन्यना की हु बीर भाषा की बर्ग-माना में भी पेसे स्वर्श के नये स्प हिंदे हैं:—

ां देखा. लिगुरस्टिक सर्वे आफ रंदिया भाग ३ ८० १

डास्टर साहब की इस कलाना में एक बान यह सरहकती है कि उन्होंने 'प' के बिलिए रूप के जिप इसके रूप का उन्हार कर के उपना है फर्यान् 'प' के रूप का विजास रूप ही उपगुक्त समस्त है बार 'घो 'के विलेप रूप के तिय 'घो 'के उपर बाली साथ की बाई से घुमाने की प्रयंता नाहिनी छोर से चुमा कर ही लगा उसे उर्ध्यन 'देक' का सा धाकार देने हुए राज दिया है हम इन रुपें की प्रयंता पुरुषर श्रीपुत पंत्र सम्बाहर का

[ै]क्स बाबाजों में कारे दुर कुछ स्टारी के हुई नहीं के '''' बरें वहीं के एवरे वर्ष शावने उपनित्त वर्षी के बरे पुत्र ' बाबारकार है।

^{*} Ti - Linguistic Sarvi

e8

सरज वर्षों का प्रदेश होता है। संस्कृत की शक्षावली देने परिस्कृत पर्व परिमार्जित रूप में है कि उसके शखीं में हस्य पर्व दीर्घ के बीच वाले स्वर के उचारण की बावरयकता हो नहीं वहती, इमीलिय कदाचित संस्रत की वर्ण-माजा में उसके निर्माणकर्ता विद्वार्त ने पेसे स्वरं के महीं रक्ता । प्रायेक भाषा की वर्ण-माजा में सबैब उन्हों स्वरेरं एवं वर्षों का प्राधान्य रहता है जेर उस भाषा के शब्दों में निरन्तर प्रयुक्त होते हैं। जे। स्वर या वर्ण भाषा के किसी भी शब्द में नहीं काने वे स्वर या वर्ण उस भाषा की वर्ण-माला में कवापि नहीं रहते।

सरस-चिट्ठल

हिन्दी भाषा की शब्दावली में संस्कृत-शब्दावली की सी बात नहीं है, उसमे क्रानेकी केमें शान्त हैं, जिनकी बालने में हस्य पर्व बीर्य स्वर के मध्यम्य स्वर की भावश्यकता होती है, येमी बना में धेसे स्वेशे का वर्ण माला में स्थान देना सर्वधा श्रानिशार्य है। बह बात विशंवनया अस समय बायम्त बावत्यक प्रतीत होगी है जय हम अजभावा तथाच प्रथयो भाषा की जिनका साहित्य में बहुत ऊँचा एवं मनत्य पूर्ण स्थान है, और जिनका पहिले बहुत समय तफ हिन्दी के काव्य साहित्य में पूर्ण प्राधान्य रह सुका है बीर भव भी भविकांश में पापा जाता है, शन्तावती उठाते हैं। हो, अब हम ध्रमनी चार्थानक खड़ी बाली की परिस्तृत अध्यायली की लेते हैं. जो ध्रव साहित्य के दोत्र में हुतगति के साच ध्रप्रसर हैं। रही है, तब हमें इसकी आवश्यकता नहीं झात होती क्वीकि, परिष्टत राष्ट्री बाली का शब्द-भगुष्ठार संस्कृत के समान क्षाद्ध पर्व परिमा-जित रूप में हाकर ऐसे जन्द नहीं रखता जिनमें हस्य धीर वीर्ध स्वर्श के मध्यस्थ स्वर की सावश्यकता पड़ती हो। सन्य भाषाओं के प्रभाव से प्रभावति होने के कारण हमारी आधुनिक माना में शर्जाका एक बहुत बड़ा समुदाय पेसा बा गया है जिसके

नित् भाषा को पर्यं माला के करिएय पर्छे से बरे सुराए पर्यं संस्कार किये गये हैं. तथा कभी भीर नये सुराएं को साधायका रखते हैं। इन नये सुधारों में से एक सुधार कारण काणिकार कुछ हस्य एवं हीर्य स्पर्यं के माधार रखें को राजान काणी भी है, जिसकी हमें इस स्थान पर काणीय काणायकार प्राप्त होती है प्रयोकि इसका प्रमुख साधाय इसारे काणायकार प्राप्त प्राप्त में है।

शक्टर सर आर्थ विरामित है। जिहिले हिली जारा है एक्ट बेशज पूर्ण पेतिगतिक और पेटानिक बाद किया है है है के को की आवश्यकता प्रतीत हुई और उट्टोर्ट देखे करते के प्रताह है। प्रताह भाषा की वर्ष-माला के द्वारा रहता करते हैं किया प्रताह प्रोणे से कुछ तथे विधानों की कार्यका की। प्रीतर प्राप्त को का उपला में भी पेते स्वरों के तथे कप दिये हैं।—

। देखा, जिमुहस्टिक सर्वे भारत होंद्रिया भार ३ कः 🖰

डाक्टर साहब की इस कार्यना में यक बार एन् कारहार है कि उरोंने 'ए' के विजिध रूप के जिस इसके रूप के उत्ताम का के रक्षण है आर्थात 'प' के रूप का विस्तास कर हो उत्ताम साम्या है और 'ओ' के विशेष रूप की जिस 'ओ' के उत्तर कर हो जाए के बाद से घुमाने की अपेता वृद्धिनों और से घुस कर हो जा उसे अर्थात 'का 'या सा आकार देते हुए रस्त दिया है हुई कि रूपे की अपेता पुश्यम श्रीपृत पंच सामापुर डो शुह

[े] याय भाषाओं के कांग्रे पुत्र कृष्ट कारों के हुए वधी के लिए की एक पुत्र को क्यों के दर्ज को कार्य कार्यकात कर्जी के सब सुधारी के सार्य की कारायका है।

^{*} The Languette Survey of India Vol. 3 Part 1





सर । बागा का प्रयोग राजा है । सक्कत को ज दावाजी वेसे परिश्वत त्व परिमालन २प न हे कि ज्यक्त बाजा में इक्क पंच क्रांच के बीच वात स्थारक स्थारमा को आधारयकता है। नहां पत्ता इसीरिनण करायन सम्भव का शण माता में उत्पक्त निमाणकवा विद्वासी न वसंस्था ६ लेगी रहेगा चायक नामा का बता बरता चा सहैत रका कार गायामा का पायान्य रहता है जो असे साथा के स्वर्श कानः र प्रथम प्रतार तास्त्रार यायका नापा**र हिस्सा**ना , अ. अकृत्य : इ.स्वरिशाचिक इस सामा इर ब्राह्माना म Berman 18 18 1

रि । इत्याद्यसम्बद्धान्यकः कामावय ् । एक उन्निका नाम्स्ययान्द्राध 45 ् । स्थर का क दिवसात र तर तथा देशों में 4-2 -. वा र स्थान देना स्थान शानवाणा है। 90 ्र र । ५३ (८९ ४ छाउटा∉ सारमता है 4" ा र र प्राप्ता को निनका साहित्य से र मार पान पर तिसक्त पहिल **पहिल** पहिल ः ः हि। - उस्त बाबान्य **स्टब्स्सा** है 🕩 ्र पाया राज्य र प्रध्वायकी उठावे हैं। अप्यानिकारण याणी की परिष्णुत क्षम्यापनी अपनित्र स्वाप्त में इत्याति के मारा ग्रायसर हो। \cdots 🔞 १९ वर्ग वाकायस्ता नहीं शान होती क्योंकि, परिष्ठत · इर प्रश्न बग्रहार सम्प्रन के समान शुद्ध वर्ष परिमान 'तर कर अ राजर पमे जन्द नहीं रातना जिनमें हस्य श्रीर दीर्घ स्वेरी क अ गुरुश त्यर की बायश्यकता पहुनी है। बाल्य मायाओं के

वस्तु व वसायाँव हाने के कारण हमारी बाधुनिक मापा में एत' क पक बहुत बहा समुद्दाय पेसा का गया है जिसके '



सरस-पिङ्गल गाल ' एम० प० के कदिगत किये हुए रूप द्याधिक उपयुक्त

क्योंकि इन क्यों में डाक्टर साइव के क्यों की भौति विशेष रमून नहीं है, केवल अपर की मात्राची की ही यार छोर से गान की अपेका दादिनी और से लगा कर उनके पूर्व हवीं से लोम कर में ही रख देना पड़ता है। इसमें न तो डाक्टर साहब ती माति पूर बाहर के। उलटना ही पड़ता है बीर न 'अर्ख रेक' है सम होने का हो भय रहता है। 6 हम किर भी अपनी भाग है विद्वानों का प्यान इस झीर आकर्षित करते हूं झीर बाहते हैं किया ती श्रीपुत "रसाल" जी के दी कप मान लिये जाय

(जिनके मान क्षेत्र में केरि द्यांति एसं झापत्ति नहीं है) या दूसरे नये क्यों की व्यवस्था की जाय, जय तक पत्ना नहीं होता तय तक हम अपने पाटकों से शहीं क्यों के प्रयोग करने का अनुराध करते हैं।

कुछ अन्य आवश्यफ छन्दें मिन हम कुछ पेसी हारी के नियम धीर दे रहे हैं जिनका प्रयोग लड़ी बाजी के कर जायप्रतिष्ट कथियों ने न्यून किया है स्रीर जिनका प्रयोग संस्थत के कवियों के द्वारा संस्थत-काव्य है बाहुत्य के साथ दुधा है। हो, भाषा के माव्यतिक का न में कविशे

ने इनका अवश्य कम व्यवहार किया है।

यह वृत्ति मालद वर्णी को होतो है। तथा समम लखु बीर दीच प्रवास के बाट लड़ भीर बाट दीर्घ वर्ण होते हैं समया हाता के बाम से बाट लड़ भीर बाट दीर्घ वर्ण होते हैं समया हाता

े हेनुद्ध बारस है । है । और ! क्षेत्र है । है इस्व हवी के जार / Jew शि *** *** *-

सार, जार, सार, जार बीर पर बन्तिम वर्ष गुरु होता है। पथा: —

उसी उदार की क्या सरस्वती बलानती: उसी उदार से घरा इतार्य-भाव मानती। उसी उदार की सदा सबीव कीर्ति-कृ.ी; तथा उसी उदार की समस्त सृष्टि पुडती।

यह कृति १७ वर्षों की होती हैं. तथा इसमें यगय, मगय, नगय, सगय, भगय, और भल में पक वर्ष लघु तथा पक वर्ष दीर्थ होता हैं; यथा—

शिखरिणी

काता ६ : पदाः— कहाँ स्निन्धा स्निन्धाः समन्द्रपत वाली रमहिदाँ।

कहाँ निर्वाचा थे. कडिन पनवारों हिस्स्पी ह समाने पालों हैं. मृदुलसुख मन्या मदन की। कहाँ पेसी हा!हा! कडिन-प्रस्टी हैं दुवन की ह

मन्दाक्रान्ता

यह बृति बार क्षः और सत अवरेषं पर विराम के साथ हुन्न रेश वर्षों अध्या मगर, मगर, नगर और दें। तगर दें। गुरु वर्षों से बनती है, प्रयान

वैराम्पानन्यस्त ज्ञितने, एक भी घार पारा। कोर्रुभी का मुस्स उसके विच के घन्य मारा !

पालेता है सुकर रस जो दिन्य प्रशानता है। मीता पास सुरस सुव है, माल प्रशानता है।

सर्ती सर्वास्य प्राप्तः

संबंदित मात्राओं से मिलकर १६ कीर ११ पर पनि हेने हुप कन मुंगुरु कीर ततु है। साथ सरसी कुन पनाया जाता है। पणा---





. सरस पिड्रल भाग मानि वेड्यो ऐंडि लाड़िली हमारी नाकी,

करि मनुद्वार सुधा धार उपराजें हम । साजें सुख सम्पति के सकल समाज बाज, शक्ति 'रतनाकर' की नैसक निवाजें हम ॥

ब्रभ्यामार्थ-प्रश्न

१ः—पिट्रल-शास्त्र किसे कहते हैं ग्रीर उसका क्या उदेश्य हैं । २ः—काव्य श्रीर कविता की परिमार्थायें देकर इनका श्रातर

वतान्री। ३:--कृष्य के कितने भेद हैं और उसका सङ्गीत से क्या

हीर कितना सम्बन्ध है। छ:—हुन्द् भीर पुत्ति में क्या भन्तर है भीर उनकी रचना की मल भाषार क्या है।

भूज आधार क्या है।

श:--कविता में इन्द्र की क्यों और कितनी भावश्यकता है।

श:--किसी-भाषा ने कन्द्र-शास्त्र की क्या उपहार दिया है

ई:--हिन्दी-भाषा ने हन्द-शास्त्र की क्या उपहार दिया है। उसका मार्मिक वर्णन करें।

अः—मात्रा (कला) किसे कहते हैं, कविता में उनका क्या स्थान हैं। सः—हम्ब पर्व दीर्घ (लखु और दीर्घ) का सहस-विवेचन

सः—हम्य पर्थं दीर्घं (लघु भीर दीर्घ) का सुरमः।पत्रथन करेत । १:—यति भीर गाँत की परिभाषायं देते हुए कथिता प्र

६:—यति धीर गाँत की परिभागार्थ देते हुए कांचना भ जनका स्थान धीर उनमे सम्बन्ध रसने वाले गुण-दीरी का सत्यिम पियेवन करें। १०:—गण क्या है धीर कितने हैं. इनकी रचना कैसे हुई। हिः—ार्ने वे हानाग्रम उनक दलक भीत कर्तने का मुद्रम पर्यंत बरेरो ।

हिल्लाहर किसे काल है जान ग्रुम वर्ते का विदेशन. उनसे सरवत्य सरके वाल क्षायद्वयक नियमी के साथ करेंगे।

रैके-चिन्द के किनने मुख्य जेट है मुक्त रूप में निस्ता।

रिशः—साधिक हुन्देर्ग झीर वर्तन्य वृत्तिये में क्या झनत हैं रपष्ट रूप से सम्मन झा

निक्संकित पद जिल तुन्ते के ब्रम्तगत है उनके मुल नियम लिग्नाः—

कि-कहंन हवाम सत्तर बात में तुम वे बावा।

कि-बात बादा वसन

मा-भगारित कांप मेना साथ न शक्त बेन्द्र ।

या-वर्षा विना नाज दवादा का हुद्या ।

चः-मधिक झार व्यथा किनना सहै .

द्य-नर ही नर ही तुम कादर ही।

का-जहां सर्वेष देव का रूपा विराजनी रही।

फि-सुनि रतनाकर का रचना रसीकी नव दीकी परी वीनीई सरीकी करिस्टाऊँ में।

मा—शीति रत रावत मीं हाई रघुनाय हैसी जारी जय विजय की नार्वा चीर हम हैं ब

टः—र्घान धान सरस घरलवा. जग श्रस कीन ।

ठः-गुन सागर नागर नाथ विमा ।

डः—कैसे बुजार नणाऊं तुग्हें रन ताती उसील सनीरन में ।



